ИОСИФ ХАЗЗАЙА

КНИГА ГЛАВ О ВЕДЕНИИ

НОВООТКРЫТЫЕ ФРАГМЕНТЫ

КРИТИЧЕСКОЕ ИЗДАНИЕ, ПЕРЕВОД С СИРИЙСКОГО, ПРЕДИСЛОВИЕ И ПРИМЕЧАНИЯ (ПРОДОЛЖЕНИЕ)[1]

Максим Глебович Калинин

магистр богословия
старший преподаватель кафедры библеистики Московской духовной академии
научный сотрудник Общецерковной аспирантуры и докторантуры имени свв. Кирилла и Мефодия
115035, г. Москва, ул. Пятницкая, д. 4/2, стр. 1.
jerm.est@gmail.com

Для цитирования: *Иосиф Хаззайа*. Книга глав о ведении. Новооткрытые фрагменты / критическое издание, перевод с сирийского, предисловие и примечания М. Г. Калинина (продолжение) // Библия и христианская древность. 2019. № 3 (3). С. 15–51. doi: 10.31802/2658-4476-2019-3-3-15-51

Аннотация УДК 248.2 (281.81)
Продолжая публиковать оригинальный текст и русский перевод новонайденных фрагментов «Книги глав о ведении» Иосифа Хаззайи (VIII в.), одного из ярчайших представителей восточносирийской мистической традиции, предлагаем вниманию читателей главы 75–162 из фрагмента, представленного восточносирийской рукописью Paris. syr. 434. Эти главы включают в себя комментарий Иосифа Хаззайи на видение Иезекииля, другие экзегетические пассажи, изречения о смирении и любви, описания мистического опыта и пространное рассуждение о роли ангелов в жизни человечества.

Ключевые слова: мистика, восточносирийская мистическая традиция, Иосиф Хаззайа, «Книга глав о ведении», видение Иезекииля, экзегеза, антропология, ангелология.

1 Первую часть публикации см.: *Иосиф Хаззайа*. Книга глав о ведении. Новооткрытые фрагменты / перевод с сирийского, предисловие и примечания М. Г. Калинина // Библия и христианская древность. 2019. Т. 1. № 2. С. 15–53.

75 155v ܬܫܡܫܬܗ̇ ܕܓܢܒܪܘܬܐ ܡܫܡܫܢܘܬܐ ܐܝܬܝܗ̇. ܒܫܘܡܠܝܐ ܕܝܢ ܒܫܡܝܐ
ܬ̈ܡܠܐ. ܡܛܠ ܕܡܫܡܫܢܘܬܐ ܕܥܙܝܙܐ ܟܝ ܫܡܝܐ ܡܬܓܠܝܐ. ܫܡܝܐ ܕܝܢ
ܡܬܠܠܐ ܟܝ ܠܗܘܕܝܐ ܐܡܝܢܐ ܕܐܠܗܐ. ܗܘܐ ܕܝܢ ܕܠܗܘܕܝܐ ܕܪܚܡܬܗ
ܕܐܠܗܐ[1] ܡܬܓܠܝܐ ܒܫܦܥܐ. ܟܝ ܗܠܟ̈ܬܐ ܕܦܘ̈ܩܕܢܘܗܝ. ܦܘ̈ܩܕܢܘܗܝ
ܕܝܢ ܡܬܓܡܪܝܢ ܒܗ̇ ܒܡܣܟܢܘܬܐ ܕܐܘܠܨܢܐ܀

76 ܫܡܝܐ ܕܝܢ ܓܢܒܪܐ ܕܐܠܗܐ ܐܝܬܘܗܝ. ܙܕܩܬܐ ܕܫܘܟ̈ܠܠܐ ܕܐܬ̈ܪܘܗܝ
ܕܠܒܒܐ ܫܦܬܐ. ܠܗ ܫܘܬܐ ܕܬܐܘܪܝܐ ܕܬܠܡܝܕܘܬܐ ܡܕܝܢܬܐ. ܕܢܫܒ
ܕܝܢ ܐܢܫ ܠܟܠܗܘܢ ܒܫܡܝ̈ܐ ܐܡܝܢܐ ܠܐ ܡܨܝܐ. ܠܒܝܐ ܕܐܢܫ ܒܗܘܢ
ܫܘܠܡܐ ܕܐܢܫܐ ܘܕܡܬܟܠܘܬܐ܀

77 ܠܗܘ ܕܡܫܡܫܢܐ ܒܗ̇ ܡܕܝܢܬܐ ܕܬܠܡܝܕܘܬܐ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܗܘܘ ܒܗܘܢܗ
ܕܡܫܝܚܐ. ܘܦܩܕܗ ܘܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܬ̈ܠܡܝܕܘܗܝ ܕܒܢ̈ܝܐ ܕܡܦܩܢ ܠܐܠܗܐ܀

78 ܡܫܡܫܢܐ ܦܩܕܗ ܟܠܗܘܢ ܠܟܠ ܓܠܝܢܐ ܕܟܣܝ. ܐܝܟ ܕܕܘܝܕ ܡܪܝ ܦܩܕܗ
156r ܣܠܩ ܦܪܘܩܢ ܕܓܒܪ. ܡܫܡܫܢܐ ܒܠܒܒܗ. ܡܬܟܬܒ ܕܡܪܝ || ܘܫܘܠܛܢܗ
ܒܦܘܡܗ ܨܝܪ. ܘܢܘܪܐ ܠܡܘܡܣܗ ܕܠܐ ܡܬܟܠܐ ܘܡܬܚܫܒ ܒܫܘܪܗ܀

79 ܐܝܟ ܐܠܗܐ ܕܫܬܐ ܡܢܗ ܟܠܗܘܢ ܘܢܘܗܪ ܠܦܘ̈ܩܕܢܘܗܝ: ܘܡܫܠܡ ܦܐܪ̈ܘܗܝ
ܘܦܫ ܠܠܒܐ ܚܠܝܐ ܕܝܢ ܡܬܒܥܐ. ܗܟܢܐ ܠܟܘ ܕܡܫܡܫܢܐ ܟܠܟܠ ܬܫܬܐ
ܡܢܗ ܚܝܐ ܕܝܢ ܕܢܬܬܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܒܗ ܚܣܝܢܘܬܗ̇[2] ܡܚܝܠܐ ܠܒܝܫܘܬܗ:
ܘܚܣܝܢܐ ܠܗܘܢ ܠܠܒܐ ܚܠܝܐ ܘܢܘܚܐ ܗܘܝܐ܀

[1] ܕܐܠܗܐ ܕܐܠܗܐ P: ܕܐܠܗܐ scripsi [2] Librarius primo ܒܚܣܝܢܐ scripsit (et fortasse ܒܪܚܣܝܢܘܬܗ̇ scribere uoluit), deinde zawgā <:> posuit (ut errorem suum indicaret) et ܚܣܝܢܘܬܗ̇ adscripsit

75. Предел для совершенства есть смирение, полноту же оно получает в любви, ибо истинное смирение рождается от любви. Любовь же рождается из непрестанного памятования о Боге. Огонь же памятования о рачении к Богу воспламеняется в душе от соблюдения[2] заповедей. Заповеди же исполняются через терпение скорбей.

76. Совершенная же любовь к Богу есть чувствование помышлений, свойственных тайнам (букв. помышлений тайн) нового века, вместе с в*и*дением созерцания Святой Троицы. А чтобы возлюбил человек всех вместе людей — невозможно, пока не воссияет в его уме помышление Суда и Промысла.

77. Сердце смиренного есть обиталище Святой Троицы, ум его — престол Христа, тело его — храм Всевышнего, а труды его — жертвы, угодные Богу.

78. У смиренного тело всякий день приносится в жертву на кресте, как и Господь наш принёс в жертву тело Свое ради спасения рода нашего. Смиренный всякий час изображает в себе[3] Воскресение Господа нашего и Вознесение Его, и зрит славу Его неизреченную, и услаждается светом Его.

79. Подобно древу, которое всякий день пьёт воду, и обильно растут листья его, и созревают плоды его, и приобретают от [действия] солнца сладостный вкус, сердце смиренного всякий час пьёт живую воду от ведения Бога, и теплотою его [т.е. ведения] приводит к зрелости добродетели свои, и сообщает им сладостный вкус и приятное благоухание.

2 Букв. «соблюдений».

3 Возможен также перевод «в душе своей».

80 ܒܪܝ ܐܬܚܫܒ ܠܗ ܠܡܡܠܠܐ ܐܦ ܥܠ ܒܚܙܬܗ ܡܢ ܠܒܪ: ܘܡܫܡܫ ܡܢ ܦܠܚ ܕܡܬܚܢܢ. ܡܛܠ ܕܡܠܐ ܕܡܫܠܐ ܚܙܬܗ ܡܢ ܠܒܪ. ܦܡܠܐ ܘܦܘܠܐ ܢܦܩܗ. ܡܢ ܠܒܗ. ܒܥܘܗܪܐ ܕܬܠܬܘܬܐ[3] ܡܥܡܪܐ. ܘܐܒܘܢܐ[4] ܒܦܠܚ ܕܡܬܚܢܢ: ܦܡ ܠܬܪ

ܒܕܠܐ ܡܬܚܢܢ❖

81 ܒܪܝ ܚܙܝ ܒܗ ܒܡܡܠܠܐ ܘܙܕܝܩ ܒܠܡܬܬܗ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܗܘ ܒܠܡܬܬܐ ܬܪܬܐ ܕܡܢܝܗ ܘܦܘܡܗ ܘܡܠܠܗ ܕܡܡܠܠܘܬܐ. ܗܘ ܕܐܡܪ ܕܠܠܘܗ ܝܥܒ ܕܢܒܥ ܐܢܐ ܘܡܡܠܠ ܐܢܐ ܒܠܒܝ: ܘܡܡܠܚܢܬܗܝ ܚܝܐ ܠܢܦܫܬܗܘܢ. ܕܗܘ

ܒܚܝܗ ܢܒܘܥ ܠܡܡܠܠܘܬܐ ܕܡܪܘܪܐ ܐܡܝܢ❖

82 ܐܝܟܘ ܕܐܡܝܢ ܡܠܬܐ ܢܒܥܐ | ܡܥܝܢܐ ܡܡܠܠܢܐ ܡܢ ܒܠܬܗ ܕܡܪܢܐ ܢܦܩ: 156v
ܡܡܠܠܐ ܕܝܢ ܕܚܢܐ ܗܘܘ ܡܥܝܢܐ: ܒܠܬܗ ܕܝܢ ܕܡܪܢܐ ܚܝ ܐܡܬܝ. ܡܕܝܢ ܒܠ ܦܘܢܐ ܕܐܬܥܬܘܝ ܠܚܬܗ ܕܡܪܢ. ܡܡܠܠܐ[5] ܕܚܢܐ ܬܪܬܐ ܡܢܗ. ܘܡܢܥܘܬܐ ܠܠܠܗܝ ܢܩܝܫܬܐ ܕܝܩܝ ܠܒܕܠܬܗ ܕܡܪܢ❖

83 ܡܐ ܕܐܬܚܙܝ ܚܙܗ ܠܗܘܐ ܕܚܕܝܐ: ܒܚܘܪܐ ܕܚܬܗ ܕܡܪܢ ܒܠܒܝ ܝܠܗܬܐ. ܗܘܝܢ ܡܫܬܡܠܠ ܠܗ ܒܡܠܒܐ ܠܡܠܬܗ ܕܡܪܢ ܕܐܡܪ: ܕܡܠܡܘܬܐ ܕܡܡܢܐ ܠܝܗ ܡܢܗܘܢ ܗܘ. ܐܦ ܠܗܘ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢܐ ܕܘܒ. ܕܐܬܦܪ ܠܚܝ[6] ܕܐܚܝܐ ܬܕܡܬܐ ܕܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܘܐ ܦܘܢܐ ܬܕܡܬܗ ܕܐܠܗܝ ܠܒܢܐ ܕܠܗܘܐ ܚܬܐ ܡܥܬܘܐ❖

84 ܠܗܘܢܝ ܠܚܕܝܐ ܕܒܕܠ ܠܡܠܝܗܘ ܘܝܠܗܘܢ ܘܚܡܥܬܗܘܢ ܒܠܒܝ ܝܠܗܬܐ. ܘܢܩܫ ܐܢܘܢ ܒܚܕ ܦܪܩܐ ܪܘܚܢܐ: ܕܐܬܗܘܢ ܠܗܘܕܚ ܕܡܪܢ❖

[3] in ܬܠܬܘܬܐ correxit P (ܬܝ suprascripta) [4] Fortasse legendum ܘܐܒܘܢܐ ܕܡܫܡܫ [5] Librarius primo uau pro ain scripsit, deinde errorem suum correxit [6] ܠܚܝ in ܠܚܝܝ correxit P (ܝ suprascriptum)

80. Сын мой, прилепись к смиренному, хотя снаружи он и ничтожен по своему облику и беден в отношении сих видимых [вещей], ибо насколько он ничтожен по своему облику снаружи, настолько светла душа его внутри светом Святой Троицы[a]. И подобно тому как он беден в сих видимых [вещах], так он богат в невидимых [вещах].

81. Сын мой, взирай на смиренного и следуй по стопам его, ибо и он следует по стопам Господа своего, Подателя и Учителя смирения, Того, Кто сказал: *Научитесь от Меня, ибо Я кроток и смирен сердцем Своим, и найдёте покой душам вашим*[b], — Который по милости Своей да сподобит нас истинного смирения, аминь.

82. Если, по слову святого пророка, источник выходит из дома Господня[c], а Источник жизни — это Христос[d], дом же Господень — это мы[e], то из каждого ума, сподобившегося видения Господа нашего, истекает источник жизни[f] и напаяет все души, жаждущие ведения Господа нашего.

83. Когда просветится внутренний взор инока светом видения Господа нашего во время молитвы, тогда он на деле поймёт слово Господа нашего, сказавшего: *Царство* Небесное *внутри вас есть*[g], — [и] также сказанное блаженным Давидом: *Просвети очи мои, чтобы я узрел чудеса, которые в Законе Твоём*[h]. Ибо ум не узрит чудес Божиих, пока не сподобится сего видения.

84. Блажен инок, который сумел упорядочить во время молитвы свои движения и помыслы и связал их единым духовным размышлением (*hergā*), которое есть памятование о Господе нашем.

---

a Ср.: *Evagrius Ponticus*. Capita cognoscitiva 4 («свет Святой Троицы») // *Frankenberg W.* Evagrius Ponticus. Berlin, 1912. S. 425 b Мф. 11, 29 (по Пешитте) c Иоиль 4, 18 (по Пешитте; в русском переводе — 3, 18) d Ср. Пс. 35, 10 e Ср. 1 Кор. 3, 16 f Ср. Ин. 7, 37 g Лк. 17, 21 h Пс. 118, 18

85 ܛܘܒܘܗܝ ܠܚܣܝܐ ܕܟܕ ܗܘ ܒܪܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܡܕܡ ܓܠܝܢܐ: ܡܕܠܗ
ܐܬܘܗܝ ܒܟܒܝܐ ܘܡܬܠܝܐ ܠܡ ܒܢ̈ܝ ܪ̈ܘܚܢܐ: ܘܥܠܠ ܠܒܘܗܘܢ ܬܫܒܘܚܬܐ
ܠܬܠܬܘܬܐ ܡܫܒܚܬܐ✤

86 ܛܘܒܘܗܝ ܠܚܣܝܐ ܕܢܚ || ܢܘܗܪܗ ܕܡܫܝܚܐ ܟܠܗ ܡܕܠܗ: ܘܗ̈ܘܐ ܠܗ 157r
ܫܠܐ ܢܘܗܪܗ ܕܟܝܢܐ: ܘܚܙܐ ܒܗ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢ̈ܝܐ ܡܬܕܒܪܢܐ ܘܡܬ̈ܬܓܠܝܢܐ:
ܘܐܬܒܣܡ ܒܚܘܒܠܐ ܕܕܠܬܗܘܢ: ܘܢܦܩ ܐܬܬܚܝ ܟܠܗ ܠܟܠܐ
ܬܐܘܪܐ ܕܬܠܬܘܬܐ ܡܫܒܚܬܐ✤

87 ܛܘܒܘܗܝ ܠܚܣܝܐ ܕܢܘܗܝ ܠܒܢܝ ܟܠܗ ܠܩܒܠܗ[7]: ܕܗ ܢܬܦܠ ܥܠ ܒܘܪܝܐ
ܕܝܘܪܐ ܘܠܠܒܟ ܒܠܗܘܒܬܐ. ܘܠܚܫܚܘܬ ܕܬܘܣܝܐ ܕܚܝܒܡ ܡܕܒܘܗܝ:
ܘܡܢܝܢ ܠܗ ܒܚܘܒܬܗܘܢ ܢܠܝܬܐ✤

88 ܛܘܒܘܗܝ ܠܗܘܝܐ ܕܐܬܝܗ̈ܒ ܠܠܗܘܢ ܗܘ ܠܚܣܝܐ ܕܒܘܒܢܗ ܕܒܢܝ. ܘܐܬܬܚܝܒ
ܡܢ ܘܠܐ ܒܥܠ ܗܘ ܠܗ[8] ܘܠܐ ܠܐܠܗܐ ܕܢܬܥܘܗܝ✤

89 ܡܕܚܬܐ ܕܐܬܬ ܠܗ ܡܠܟܐ ܚܒܒܝ ܒܚܘܣܝܐ ܥܪܝ[9] ܠܒܘܪܝܗ: ܘܫܡܥܐ ܕܐܬܬ
ܠܗ ܗܘܝܐ ܕܚܒܡ ܒܕܠܬܐ ܐܠܗܘܬܐ. ܚܣܝܐ ܓܡܠܝ ܥܠ ܒܠܗܘܢ
ܚܠܝܢ ܒܚܢ̈ܬܗ✤

90 ܥܘܒܚܐ ܠܟ ܐܬܬܐ ܠܚܘܐ. ܕܢܦ ܐܢܬ ܒܢ ܕܠܟ: ܘܦܪܕ ܐܢܬ ܒܢ ܠܘܬ
157v ܠܬܪܬܐ ܕܠܐ ܢܗܪ. ܠܒܟܐ ܡܢܝ ܕܡܢܚܡܘܬܟ ܡܢܗ | ܡܟܐ ܕܢܠܘܠ.
ܘܠܠ ܬܘܒܟܐ ܕܠܐ ܡܬܕܪܒܘܬܟ ܡܢܗ ܡܒܒܚ ܕܢܠܠܠ: ܐܠܐ ܐܢ ܗܘ
ܕܓܒܬ ܒܗ ܘܠܒܪܬ ܒܗ ܠܗܡܢܝܢܘܬܐ. ܘܠܒܪܬܗܘܢ ܠܗܡܢܐ ܠܚܘܒܟ:
ܘܡܒܠܐ ܗܠܕܐ ܠܐܠܗܘܬܟ✤

[7] ܠܩܒܠܗ ܠܘܩܒܠܗ P: ܠܩܒܠܗ scripsi [8] ܘܐܬܬܚܝܒ ܗܘ ܠܗ, in margine ܡܢ ܘܠܐ ܒܥܠ additum P [9] ܥܬ̈ܝ in ܥܪܝ correxit P

85. Блажен инок, у которого, когда он стоит коленопреклонённый на земле пред Крестом, ум пребывает на небе, и беседует с духовными природами, и изрекает[4] с ними славословие Преславной Троице.

86. Блажен инок, в уме[5] которого воссиял свет Христа и [и которому сей свет] становится вместо света Солнца, и он узрел в нём [в сем свете] все природы умопостигаемые и чувственные, и усладился помышлением ведения о них, и снова упокоился на лоне созерцания Святой Троицы.

87. Блажен инок, который узрел в сердце своём Господа нашего сидящим на огненном престоле и облечённым в пламя, и духовные чины, стоящие пред Ним и возносящие Его сладостными песнопениями[a].

88. Блажен ум, на котором почило оное облако славы Господа нашего, так что он сокрылся в нём и не ведал ни себя самого, ни того что вокруг него[6] [b].

89. Жители города, у которого мудрый царь, живут в тишине. И [в] душе, у которой ум мудр в божественном ведении, тишина правит всеми её силами во [всех] её частях.

90. Слава Тебе, сокровенный Сущий, расточающий от Своего и дающий награду из Своей богатой сокровищницы, которая не оскудевает. В море, Господь мой, милосердия Твоего кто может войти и о бездне непостижимости Твоей кто способен изречь, кроме Того, о Ком Ты благоволил, и в Ком возобитал телесно, и Кого соделал обителью любви Твоей и поклоняемым храмом Божеству Твоему[c].

---

a Ср. Ис. 6, 1–4 b Ср. 2 Пар. 5, 13–14 (по Пешитте); ср.: *Isaacus Ninevita.* Collectio III. Sermo 8, 8 // CSCO. 637. P. 58 c Ср.: *Aphnimaran.* Capita gnostica 90 // *Калинин М. Г.* Новое свидетельство полемики о том, может ли человечество Христа созерцать Его Божество // БВ. 2019. Т. 34. № 3. С. 275

---

4 Глагол *lʕz* означает «бормотать, лепетать, произносить необычные звуки».

5 Букв. «внутри ума».

6 О мотиве облака у восточносирийских мистиков см.: *Beulay R.* La lumière sans forme: introduction à l'étude de la mystique chrétienne syro-orientale. Editions de Chevetogne, 1986. P. 19, 138–145, 248 (n. 49)

91 ܗܘܝܐ ܕܕܒܝܪ ܡܫܘܚܬܐ[10] ܒܪ ܫ̈ܬܐ: ܘܗܘܝܐ ܡܪܒܝܢܘܬܗ[11] ܕܡܫܝܚܝܐ. ܠܐ
ܗܘܐ ܡܪܒܝܢܘܬܐ ܠܫܠܝܐ. ܐܝ ܕܡ ܢܬܪܐ ܢܦܫܗ ܒܪ ܒܫܘܡܗ ܬܘܠܕܬ ܡܪܒܝܢܘܬܗ
ܕܡܢܝ. ܡܪܒܝܢܘܬܐ ܠܫܠܝܐ ܗܘܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܕܗܘܝܐ ܡܠܠܐ ܕܝܕܥܠ
ܠܐ ܡܡܚܣ. ܐܘ ܒܕܒܝܫܐ ܡܬܬܘܒ ܐܘ ܒܕܫܡܠܝܐ ܘܡܪܒܐ܀

92 ܐܪܒܐ ܒܫܬܐ ܒܒܐ ܐܝ ܡܬܦܠܓܐ. ܒܫܒܠܐ ܦܐܡ ܐܒܪܗ. ܘܠܒܗ
ܕܣܒܐ ܡܢܪ ܢܦܫܐ. ܒܒܐ ܐܝ ܠܢܒܝ ܠܐ ܡܦܢܐ ܦܬ̈ܐ ܕܪܘܚܐ ܐܠܐ ܐܝ
ܕܒܫܘܬܐ. ܕܐܬܬܗܘܝ ܪܘܠܐ. ܣܗܒܐ. ܒܫܘܬܐ. ܠܡܬܐ. ܐܒܬܐ.
ܦܫܡ ܗܒܪܐ܀

93 ܠܥܡܡܐܝ ܒܐܦܐ ܒܗܘܪܬܗ ܘܦܥܝܠܘܬܗ ܐܥܠܝ̈ܬܗ ܠܠ ܡܠܬ̈ܐ
ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܥܡܐ. ܘܠܡܘܕܐ ܗܒܪܘܬܐ. ܢܠܠܬܗ ܘܡܥܒܕܢܘܬܗ
158r ܒܪܢܬܗ ܒܪ ܣܬܐ ܕܠܠܠܡ. || ܗܘܝܐ ܕܡܝܐ ܒܗܘܪܬܐ ܘܦܥܠܘܬܐ. ܠܗ
ܡܬܗܒܝܢ ܡܠܬ̈ܐ ܕܒܠܬܐ. ܘܬܘܗܬܐ ܢܬܬܘܬܗ ܠܡ ܥܡܡܐܝ ܒܐܦܐ[12]܀

94 [13]ܣܘܬܬܐ ܗ̇ܝ ܕܒܢܘܐ ܣܘܡܣܐܠ[14] ܢܒܝܐ ܠܠ ܢܘܪ[15] ܒܒܪ[16]. ܠܦܘܫܩܐ ܐܬܬܝܗ̇
ܕܗܘܝܐ ܕܡܚܒܠ ܣܘܬܐ[17] ܕܬܠܬ ܬܐܘܬܪ̈ܘܬܗ[18]. ܗ̇ܝ ܕܡ ܕܐܦ̈ܐ ܕܒܢܒܐ[19].
ܠܦܘܫܩܐ ܐܬܬܝܗ̇[20] ܕܬܐܘܪܝܐ[21] ܕܬܠܬܘܬܐ ܡܒܥܬܐ ܠܡ ܐܪܙܐ[22]

[10] ܡܫܘܚ̈ܬܐ in ܡܫܘܚܬܐ correxit P [11] ܡܪܒܝܢܘܬܐ in ܡܪܒܝܢܘܬܗ correxit P [12] ܦܐܦܐ P: ܒܐܦܐ scripsi [13] Hoc caput in Fragmento altero (H et K testimonio) quoque inuenitur [14] ܣܘܡܩܐܠ H K: ܣܘܡܣܐܠ P [15] ܢܘܪܐ H K [16] H K addunt: ܘܐܘܩܕܗ̇ ܐܦܬܡ [17] ܘܡܚܒܠ ܣܬܐ H K: ܕܡܚܒܠ P, ܣܘܬܐ suprascriptum [18] ܠܐܬܘܪ̈ܘܬܗ H K [19] ܒܢܒܐ H K [20] ܠܦܘܫܩܐ ܐܬܬܝܗ̇ P H: ܐܬܬܝܗ̇ ܒܦܘܫܩܐ manu posteriore in ܐܬܬܝܗ̇ ܒܦܘܫܩܐ correctum K [21] ܠܐܘܪܝܐ K [22] ܕܐܪܐ H K

91. Ум, который очистил *кному* от страстей и стал колесницею Христа, не станет колесницей для сатаны. Если же он разрешит себя от упряжки колесницы Господа нашего, то станет колесницей для сатаны, как сказано: «Словесный ум не может стать праздным: он подвигается либо направо, либо налево»[a] — и прочее.

92. Сколько ни возделывается плохая земля, её земледелец пребывает в тревоге. И сердце инока, преогорчённого душою, сколько он ни трудится, не приносит плодов духа, но только [плоды] зла, которые суть гнев, зависть, зло, подавленность, ярость, потеря надежды.

93. Симона Кифу его грубость и простота соделали имеющим власть над ключами Царствия Небесного[b], а Иуду Искариота его хитрость и лукавство соделали чуждым жизни вечной[c]. И уму, стяжавшему грубость и простоту, подаются ключи ведения, чтобы он стал сонаследником Симона Кифы.

94. Животное с четырьмя лицами, которое пророк Иезекииль видел на реке Ховаре[d], есть образ (*ṭup̄sā*) ума, приявшего видение трёх созерцаний [телесных, бестелесных и Суда и Промысла], *лицо человека*[e] [7] же есть образ (*ṭup̄sā*) созерцания Святой Троицы, а вместе и тайны единения человека от нас с Богом Словом. Четыре же лица [вместе] есть образ (*ṭup̄sā*) четырёх добродетелей души, которые суть целомудрие (*nak̲pū̲ṯā*), святость, праведность и мужество. *Четыре колеса*[f] же есть образ (*ṭup̄sā*) четырёх крыльев ума, которыми он летает и парит в обителях созерцаний [и] которые суть мудрость, ведение, разумение (*sakkūltānūṯā*) и любовь[8], полнота их всех. [Сказанное] же: *ноги их прямые*[g] — возвещает о простоте ума и его единении со Христом[9];

---

a *Marcus Eremita*. Sermo 3, de poenitentia // SC. 445. P. 243 b См. Мф. 16, 18–19 c См.: Мф. 26, 14–16; Мк. 14, 10; Лк. 22, 3–6; Ин. 12, 4–6; 13, 21–30 d Ср. Иез. 1, 1.3.4–10 e Иез. 1, 10 f Ср. Иез. 1, 15.16 g Иез. 1, 7 (по Пешитте)

---

7 Букв. «то, что *лицо человека*». Выражение «то, что» (*hāy d-*), регулярно используемое для оформления цитат из Священного Писания, оставлено в данной главе без перевода и передано только кавычками.

8 Из оригинального текста ясно, что «мудрость, ведение, разумение и любовь» относятся к «крыльям ума», а не к «обителям созерцаний».

9 В западносирийской версии за этим предложением следует добавление: «[сказанное] *ступни их сверкали, как медь* (ср. Иез. 1, 7), означает (*rāmzā ʕal*) твёрдость ума в Боге».

ܕܚܙܝܘܬܗ[23] ܕܒܪܢܫܐ ܕܒܗ: ܠܗ ܐܠܗܐ ܡܠܬܐ. ܐܘܕܥ[24] ܕܝܢ ܐܦ̈ܝܢ. ܠܡܦܩܐ ܕܐܘܕܥ[25] ܡܫܬܪ̈ܝܬܐ[26] ܕܝܩܪܐ. ܕܐܬܚܙܝ. ܢܦܩܬܐ ܘܡܫܬܘܕܥܬܐ. ܘܡܐܬܝܬܐ ܘܫܠܡܘܬܐ. ܗܘ ܕܝܢ ܕܐܘܕܥ[27] ܠܚ̈ܠܠܝܢ. ܠܡܦܩܐ ܕܐܘܕܥܐ[28] ܠܟ̈ܠܗܘܢ ܕܗܘܝܐ: ܕܒܗܘܢ ܦܪܫ ܘܚܠ̈ܛ ܒܐܘ̈ܕܝܐ[29] ܬܐܘܪ̈ܝܬܗ[30] ܕܐܬܚܙܝ. ܢܣܡܬܐ ܘܒܠܬܐ ܘܡܡܠܠܘܬܐ. ܘܡܥܐ[31] ܕܗܘܘ ܒܡܡܠܠܐ ܕܚܠܡܝ[32]. ܗܘ ܕܝܢ[33] ܕܢ̈ܠܠܗܝܢ ܦܬܝ̈ܟܐ[34] ܗܘܝ ܟܠ ܦܬܝܟܘܬܗ ܕܗܘܝܐ ܒܡܕܒܪܢܘܬܐ ܘܫܝܘܬܗ ܕܠܗ ܡܬܚܙܝܐ[35]. ܗܘ ܕܝܢ ܕܐܒܐ ܕܒܪܢܫܐ ܬܚܝܬ ܠܟܝ̈ܢܝ | ܠܟ ܠܗܘܪܝܗ ܕܐܠܗܐ ܐܠܗܐ ܕܫܦܝܪ[36] ܠܗܘܝܐ: ܕܠܐ ܝܦܩ ܡܢ ܢܗܘܪܐ ܕܡܫܬܪ̈ܬܗ[37]. ܗܘ ܕܝܢ ܕܠܟ̈ܝܢܝ ܢܣܒ ܗܘܘ ܚܕ ܠܚܕ. ܟܠ ܢܣܒܘܬܗ ܘܫܘܬܗ ܕܗܘܝܐ ܕܠܗ ܡܬܚܙܝܐ. ܗܘ ܕܝܢ[38] ܕܐܒ̈ܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܟܠ ܡܠܠܘܬܗ ܘܡܫܠܡܘܬܗ ܕܗܘܝܐ. ܗܘ ܕܝܢ ܕܐܢܫ̈ܐ ܟܠ ܣܓܝܐܬܐ ܒܣܓܝܐܬܐ. ܗܘ ܕܝܢ ܕܬܘܪܐ ܟܠ ܡܬܚܙܝܐ ܕܢ̈ܓܝܐܬܐ ܒܣܓܝܐܬܐ[39]. ܗܘ ܕܝܢ ܕܒܝܬܐ. ܟܠ ܡܠܠܘܬܗ ܘܦܪܘܣܘܬܗ ܕܗܘܝܐ: ܐܡܬܝ ܕܒܣܝܬܐ ܫܠܛ̈ܝ[40] ܢ̈ܓܝܬܐ ܘܣܓܝܬܐ ܘܡܠܠܘܬܐ. ܗܘ ܕܝܢ ܕܢܘܪܐ ܣܓܝܐ ܐܝܬ[41] ܗܘܬ ܒܓܝ̈ܠܐ. ܟܠ ܡܒܪܒܘܬܗ ܕܢܘܪܐ ܕܡܘܒܪܐ ܒܗܘܝܐ ܦܠܘܚܐ. ܘܗܘ ܕܐܝܟ ܡܠܐ ܕܐܠܗܐ ܒܗ ܕܐܢ̈ܫ ܗܘܝ. ܟܠ ܡܬܠܠܫܘܬܗ ܕܬܐܘܪܝܐ [42] ܕܬܠܒܘܬܐ ܡܒܪܬܐ. ܠܗܘܝܐ ܒܟܝ ܝܠܗܬܐ. ܘܗܘ ܕܟܠܟ ܡܢ ܓ̈ܠܠܐ [43] ܕܢ̈ܚܡܝ[44]. ܐܝܟ ܕܗܘܬܐ ܕܒܐܦܐ[45] ܕܫܦܠܐ. ܟܠ ܬܘܒܬܗ[46] ܕܗܘܝܐ. ܗܘ ܕܝܢ[47] ܕܢ̈ܓܪܐ[48] ܒܘܪܫܐ[49]. ܠܟܠ ܡܢܗ: ܘܟܠ ܒܘܪܫܐ ܕܗܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܟܠ ܡܠܒܘܬܗ ܕܗܘܝܐ ܕܟܠ[50] || ܬܒ̈ܥܐ: ܟܐ ܕܐܬܐ ܠܒܪ ܘܐܬܡܠܝ ܒܚܠܡܝ ܡܫܬ̈ܪܝܬܐ܀

[23] ܕܚܙܝܘܬܗ P H: ܚܙܝܘܬܐ in ܚܙܝܘܬܗ correxit K [24] ܐܘܿܕܥ H K [25] ܘܐܘܿܕܥ H K [26] ܡܫܬܪܝܘ H K [27] ܘܐܘܿܕܥ H K [28] ܘܐܘܿܕܥܐ H K [29] ܒܐܘ̈ܕܝܐ H K: ܒܐܘܕܝܐ P [30] ܠܐܬܘܪ̈ܘܬܗ H K [31] ܘܡܥܐ H K: P librarius primo uau et he scripsit, deinde pāsōqā <.> posuit (ut errorem suum indicaret) et ܘܡܥܐ scripsit [32] ܕܚܠܡܝ H K: ܕܚܠܡܗ̈ܝ P [33] ܗܘ ܕܝܢ H K: ܗܘܕܝܢ P [34] ܦܬܝܟܐ H K: ܕܦܬܝܟܐ P [35] post ܡܬܚܙܝܐ H K addunt: ܗܘ ܕܝܢ ܕܦܬܝܟܘܬܗ ܡܬܚܙܝܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܚܕ ܗܕܐ. ܟܠ ܡܬܚܙܝܢܘܬܗ ܕܗܘܝܐ ܕܒܠܝܬܐ ܙܒܢܐ. K [36] ܕܫܦܝܪ K [37] ܕܡܫܬܪ̈ܝܬܗ H K: ܕܡܫܬܪ̈ܬܗ in ܕܡܫܬܪ̈ܝܬܗ correxit P (ܬ suprascriptum) [38] ܗܘ ܕܝܢ H K: ܗܘܕܝܢ ܕܝܢ P [39] ܒܣܓܝܐܬܐ H K: ܒܣܓܝܐܬܐ P [40] ܫܠܛܝ H K [41] ܐܝܬܘܗܝ H K [42] ܠܬܐܘܪܝܐ H K [43] ܡܢ ܓ̈ܠܠܐ H K [44] ܕܢ̈ܚܡܘܗܝ P; ܕܢ̈ܚܡܝ H; ܕܢܚܡܘܗܝ K: ܕܢ̈ܚܡܝ scripsi [45] ܕܒܐܦܐ H K [46] post ܬܘܒܬܗ H K ܡܠܬܐ addunt [47] ܕܝܢ P: omittunt H K [48] post ܢܓܪܐ H K ܗܘܐ addunt [49] ܒܘܪܫܐ P; ܒܘܪܫܐ ܕܢܓܪܐ in ܒܘܪܫܐ correxit H; ܒܘܫܐ in ܒܘܪܫܐ correxit K (ܪ suprascriptum) [50] ܘܟܠ H K: ܟܠ P

[сказанное:] *рука человеческая* [была] *под крыльями их*[a] — [означает] памятование о Боге, поддержавшее ум, дабы он не упал с высоты своих добродетелей; [сказанное:] *их крылья соприкасались* (*naqqīpīn*[h]*waw*) *одно к другому*[b] — [означает] прилепление (*naqqīpūṯā*) ума ко Христу и единство с Ним; *лицо человека* [означает] разумную и познающую силу ума (*mlīlūṯēh w-yaddūʕtānūṯēh d-hawnā*); [*лицо*] *льва* [означает] естественную яростную [часть души] (*ḥemṯā kyānāytā*); [*лицо*] *тельца* [означает] естественную вожделевательную часть [души] (*mnāṯā d-regṯā kyānāytā*); [*лицо*] *орла* [означает] лёгкость и парение ума, когда вожделевательная, яростная и разумная силы [души] (*regṯā w-ḥemṯā wa-mlīlūṯā*) действуют естественным образом; [сказанное:] *живой Дух* (*rūḥā ḥaytā*) *был в колесах*[c] — [означает] действие Духа Святого в подвизающемся уме (*hawnā pālōḥā*). А [сказанное:] *когда они шли*, [*я слышал*] *как бы глас Божий*[d] — [означает] откровение созерцания Святой Троицы, [бывающее] у ума во время молитвы. [Сказанное] же: *над сводом* (*maṭlā*)*, который над головами их,* [*находилось*] *будто подобие камней сапфира* — [означает] естественное состояние ума; [сказанное:] *над* ним [сапфира] был поставлен огненный *престол*, а на *престоле* [было] *подобие человека*[e] — [означает] царствование ума над страстями, когда он усовершится и достигнет полноты во всех добродетелях.

---

a Ср. Иез. 1, 8 b Иез. 1, 9 c Иез. 1, 20 (по Пешитте) d Иез. 1, 24 (по Пешитте)
e Ср. Иез. 1, 26–27

159r 95 ܟܕ ܕܝܢ ܒܢ ܐܢܫ ܡܬܕܒܪ ܠܗ ܐܠܗܐ. ܣܠܩܐ ܒܪܘܚܐ ܪܘܚܢܘܬܗ ܘܕܟܝܘܬܗ
ܘܕܒܝܩ ܒܗܘܐ ܠܗ. ܟܕ ܕܝܢ ܒܗ ܫܠܡܬܐ. ܥܠ ܚܦܝܛܘܬ ܠܒܘܬܗ
ܘܬܫܡܫܬܗ ܘܚܘܒܗ ܢܠܒܫ❖

96 ܠܒܫܘܗܝ ܠܚܣܝܐ ܕܐܬܬܪܝܚ ܡܚܘܠܐ ܕܕܡܠܐ ܒܗ ܠܒܘܫܗ: ܘܠܐ ܬܠܬ
ܒܠܠܝܐ ܘܒܐܝܡܡܐ. ܕܒܗ ܒܗ ܒܠ ܠܐܘܪܚܐ ܕܡܘܠܟܢܐ: ܗܝ ܕܡܪܕܝܬܐ
ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ❖

97 ܠܒܫܘܗܝ ܠܐܝܢܐ ܕܒܥܐ ܠܡܠܐܟܐ ܕܒܥܠܝܠܘܬܐ ܕܢܫܩ ܠܗ[51]: ܟܕ ܢܫܩ
ܗܦܟܐ ܕܗܘܐ ܘܡܠܐ ܡܢܗ ܡܟܬܒܬܐ ܕܒܠܠܝܬܒܘܗܝ. ܠܒܫܘܗܝ ܕܝܢ
ܬܪܐܬܐ ܐܢ ܢܫܩ ܒܬܪܐ ܕܒܠܬܐ ܘܫܦܪ ܠܗ❖

98 ܠܒܫܘܗܝ ܠܐܝܢܐ ܕܫܦܝܐ ܢܗܪܐ ܠܡܫܡܫܘ ܬܪܝܢܐ: ܘܐܝܬܘܗܝ
ܠܡܫܡܫܘ ܡܕܡܝܐ❖

99 ܐܝܢܐ ܕܢܦܠܐ ܕܐܝܬܘܗܝ ܠܡܥܡܕܐ. ܡܕܡܝܬܐ[52] ܝܠܦ ܦܘܫܩܗܘܢ ܘܗܕܝܢ ܢܠܒܫ
ܠܠܒܘܗܝ: ܕܐܝܢܐ[53] ܐܬܘܬܘܗܝ ܘܐܝܟܢܐ ܠܗܢ: ܘܐܝܟܢܐ[54] ܡܬܚܙܝܐ. ܘܗܟܢܐ
159v ܕܒܝܬ ܫܠܝܡ: | ܗܘ ܡܢܝ ܡܢܗܘܢ ܠܗ ܢܫܡܗ ܐܝܟ ܕܗܘ ܬܒܠ❖

100 ܥܡܠܝܣ ܒܢܝ ܠܡܚܡ ܕܐܡܪ ܐܝܢܐ ܠܗ ܘܐܡܪ ܠܡܠܟܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܪܐ
ܐܡܪ ܐܝܢܐ ܠܗ. ܕܐܝ ܬܪܝܢܐ[55] ܠܐ ܦܠܐܣ ܠܗ: ܘܡܢܗܘܢ ܠܗ ܕܐܡܪܐ ܠܗܢ
ܡܢܝ[56] ܠܐ ܡܣܒܪ ܐܢܫ ܠܗ. ܘܟܕ ܒܠܒܘܡ ܦܢܝܫ ܒܬܪܒܐ ܘܡܦܩܣܝܣ
ܗܦܟܐ. ܠܠ ܗܕܐ ܠܐ[57] ܒܥܠܝܠ ܠܝ❖

101 ܘܢܠܐ ܕܡܘܕܪܝܠ ܕܠܐ ܒܘܚܡܐ. ܠܐ ܐܬܬܐ ܠܚܘܡܠܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܟܒ ܦܐܪܐ.
ܘܕܠܬܐ ܕܡܕܡܝܐ ܠܗܘܒܐ ܘܠܡܚܒܘܬܐ. ܠܐ ܐܬܐ ܐܬܐ ܠܚܘܡܠܐ
ܘܠܒܢܐ ܦܐܪܐ ܕܙܕܩܘܬܐ❖

102 ܘܗܠܐ ܕܬܒܥܬܐ ܘܗܠܐ ܗܘ ܡܕܡܝܐ ܕܚܝܠܐ. ܡܕܡ ܠܗ ܗܝ ܕܠܠܠ[58]
ܒܝ ܚܝܠܐ❖

[51] ܕܒܥܐ ܕܒܥܠܝܠܘܬܐ ܕܢܫܩ ܠܗ P: ܕܒܥܐ ܠܡܠܐܟܐ ܕܒܥܠܝܠܘܬܐ ܕܢܫܩ ܠܗ scripsi [52] ܡܕܡܝܬܐ P B: ܡܩܛܠܐ V [53] ܕܐܝܢܐ B V: ܕܐܝܟܢܐ P [54] ܘܫܘܟܢܐ B V [55] ܠܙܘܓܐ V [56] ܦܠܐܣ ܠܗ: ܘܡܢܗܘܢ ܠܗ ܕܐܡܪܐ ܠܗܢ ܡܢܝ P: ܦܠܐܣ ܠܗ ܘܐܡܪܐ ܕܐܡܪܢ ܡܢܝ V [57] ܠܐ P: omittit V [58] In hoc numero librarius primo aleph (1) pro beth (2) scripsit, deinde errorem suum correxit

95. Когда же из четырёх познаётся нами Бог, Он показывает нам силу Своих творчества, праведности и суда. Когда же из трёх [Он познаётся нами], мы узнаём об изобилии Его благости, милости и любви.

96. Блажен инок, из очей коего прорвался поток слёз, и [оные слёзы] не имели конца ни ночью, ни днём, ибо он уже вошёл в Землю обетованную, *текущую млеком и мёдом*[a].

97. Блажен тот, кто узрел сопутствующего ему ангела-хранителя держащим огненный меч и прогоняющим от него полчища врагов его. Наипаче же он блажен, если [ангел] держит огненные свитки ведения и подаёт [их] ему[b].

98. Блажен тот, кто стал чуждым своей второй семье и сподобился своей первой семьи.

99. Тот, кто хочет наследовать Христу, должен прежде всего исполнить Его заповеди, и тогда он постигнет, где Он пребывает, и где обитает, и как Он выглядит. И когда он научится сему, Сам Господь покажет ему Самого Себя [таким способом,] как Он Сам знает.

100. Слушай, сын мой, что я скажу тебе, и веруй слову моему, ибо я говорю тебе истину: если не отверзут тебе дверь[10] и не покажут тебе[11], где обитает Господь наш, ты не найдёшь Его, и даже если целый день мы будем читать [Священные] Писания и истолковывать книги, нам не[12] будет до этого дела.

101. Семя, посеянное не в своё время, не взрастёт (*lā ʔāṯē l-šumlāyā*) так, чтобы принести плоды. И ведение, которое предшествует любви и смирению, не достигнет совершенства (*lā ʔāṯyā l-šumlāyā*) и не принесёт плодов праведности.

102. Движение покаяния есть первое движение естества; предшествует ему то, которое превыше естества.

a Исх. 3, 8.17; см.: *Iosephus Hazaias*. Epistula de tribus gradibus vitae monasticae 61 // PO. 45/2. P. 330–332 b Ср.: Иез. 2, 9; Иер. 5, 14

10 «Двери» (Vat. syr. 592).

11 Слова: «и не покажут тебе» — опущены в Vat. syr. 592.

12 Частица «не» опущена в Vat. sir. 592.

103 ܓܘܢܐ ܕܬܝܒܘܬܐ ܓܘܢܐ ܗܘ ܕܕܟܝܘܬܐ. ܢܦܩ ܠܗ ܕܝܢ ܓܘܢܐ ܕܫܒܪܘܬܐ܀

104 ܠܫܠܝܐ ܬܪܝܢ ܓܘ̈ܢܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܚܕ ܕܢܦܫܐ ܘܚܕ ܕܪܘܚܢܘܬܐ܀

105 ܐܦ ܒܪܢܫܐ ܚܕܐ ܒܫܢܝ ܐܝܬ ܘܥܒܕ[59]. ܘܚܕܐ ܪܒܐ ܫܘܬܐ ܕܡܕܒܪܐ
160r ܠܟܠ ܚܢܢ. ܕܡܠܟܘܬܗ ܒܫܢܝ ܐܝܬ. ܗܝ ܕܡܠܐ̈ܟܐ ‖ ܒܥܠܡܐ ܡܬܪܓܠܐ
ܠܡܝܬܐ܀

106 ܐܝܟܢܐ ܕܝܢ ܦܫܛܐ ܡܕܝܢܬܐ ܡܬܠܐ ܢܦܘܩ ܕܡܕܒܪܐ. ܗܟܢܐ ܕܝܢ
ܢܗܘܐ ܕܡܕܒܪܐ ܡܬܠܐ ܒܠܗ ܢܦܫܐ: ܢܦܘܩ ܕܫܡܝܐ ܘܒܠܬܐ ܕܡܪܝܐ܀

107 ܠܡܪܐ ܕܒܗ ܠܒܪܐ ܢܦܫܐ ܕܝܢ ܚܟܡ ܕܠܠܒܐ ܗܘܐ ܠܫܘܦܪܗ ܕܠܠܒܐ
ܕܠܬܠܝ ܐܝܬܘܗܝ. ܚܟܡ ܘܪܚܡܬܗ ܕܡܬܚܫܢܐ܀

108 ܠܒܒܗܘܢ ܠܫܘܢܐ ܕܡܬܒܕ[60] ܒܠܒܒ ܘܠܗ ܕܡܪܢ ܒܗ ܡܢܘܪ ܠܗ ܘܐܡܪ.
ܕܠܐ ܦܩܕܢ ܘܗܘܝܢ ܠܟ ܒܪܐ ܘܪܬܐ ܕܫܬܝܬܝ. ܘܕܠܬܐ ܕܚܝܐ
ܕܚܒܠܟ ܐܢܐ ܒܐܢܫܝܢ܀

109 ܠܒܒܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܚܝܠܐ ܕܡܠܒܫ ܟܪܐ ܒܢܗ ܫܘܒܬܗ ܘܪܘܬܗ ܘܠܒܫܘܬܗ
ܕܠܠܟܐ ܗܢܐ: ܘܐܬܟܫܡ ܒܗܘ ܪܢܐ ܗܘܝܐ ܕܠܠܟܐ ܕܠܬܠܝ. ܕܗܘܐ
ܡܫܝܚܐ ܫܘܒܚܐ ܕܒܢܝ܀

110 ܗܘܝܐ ܕܒܟܐ ܒܝܩܪܘܬܐ ܐܝܬ ܠܗ ܕܢܬܒܠ ܢܦܘܪܐ ܕܒܠܬܐ. ܘܒܕܒܘܬܐ
ܡܕܡܟܐ ܕܠܫܐ ܡܢܝܐ ܘܡܨܝܢܐ ܦܪܘܫܐ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܗܘ ܠܫܐ ܡܢܝܐ
160v | ܕܒܠܬܐ: ܘܡܨܝܢܐ ܠܟܘܬܐ ܐܠܝܢ ܕܗܘܝܢ ܠܒܠܬܗ ܕܡܪܢ܀

[59] ܘܥܒܕ ܘܥܒܕ P: ܘܥܒܕ scripsi [60] ܕܡܬܒܕ P: ܕܡܬܒܕ scripsi

103. Движение покаяния есть движение смирения; сопутствует же ему движение терпения.

104. У сатаны есть два движения: одно — зависти, другое — гордыни.

105. О человек! насколько ты презрен и ничтожен, и насколько велико сокровище, спрятанное внутри тебя[a], — [сокровище,] ради которого ты почтён и видения которого ангелы вожделеют во всякое время.

106. Подобно тому как с восточной стороны рождается солнечный свет, так и от любви ко Христу рождается внутри души свет жизни и ведение истины.

107. Мост, по которому душа переходит из мрака века сего к свету будущего века, есть любовь и рачение ко Христу.

108. Блажен ум, всякий час слышащий глас Господа нашего, просвещающего его и говорящего: «Соблюдай заповеди Мои[b] и будь Мне сыном и наследником[c] сокровищ Моих и духовных сокровищниц, которые Я предаю в руки твои».

109. Блажен тот инок, кто совлёк и сбросил [с себя] мерзость и скверну века сего и усладился оным приятным благоуханием века будущего, которое есть Христос, дыхание жизни.

110. Чистому уму естественно, чтобы он источал свет ведения. И подобно источнику, изливающему воду и напаяющему рай, он тоже изливает воды ведения и напаяет сердца тех, кто жаждет ведения Господа нашего.

---

a Ср. Мф. 13, 14 b Ср. Ин. 14, 15; 15, 10 c Ср.: 2 Цар. 7, 14; 1 Пар. 17, 13; Гал. 4, 7

111 ܠܕܡܘܬܗ ܠܚܣܝܐ ܕܝܘܐ ܒܠܒܗ ܥܠܡܘܬܐ[61] ܠܥܠܡ ܒܗ ܒܬ̈ܪܝܢ ܠܠܒܗ̇
ܡܠܝ ܐܬܘ̈ܬܐ: ܗ̇ܢܘ ܕܝܢ ܬܘ: ܠܒܕ: ܡܝܡ: ܗܘ: ܡܝܡ ܗܘ: ܚܙܬ:[62] ܘܦܢܐ
ܘܐܬܦܠܓ ܒܗܘܢ: ܘܠܐ ܓܒܪ ܗܘܐ ܫܦܝܪܐ ܡܢ ܠܒܗ ܠܐ ܠܠܝܐ ܘܠܐ
ܐܝܡܡܐ. ܓܘܒܐ ܕܝܢ ܟܠ ܓܘܒܐ. ܠܐܝܢܐ ܕܐܬܦܩܕܬ ܠܗ ܡܕܒܪܢܘܬܐ
ܒܪܒܝܐ ܬܪܝܢܐ: ܘܡܢܐܬܘܗܝ ܡܕܒܪܢܘܗܝ ܠܗܘܢܐ ܫܦܝܪܐ ܡܕܒܪܐ. ܘܓܠܝܡ
ܚܟܐ[63] ܕܡܕܒܠܗ ܡܢ ܒܗܘܢܐ ܕܗܠܝܢ ܐܬܘ̈ܬܐ ܐܠܗ̈ܝܬܐ܀

112 ܐܦ ܕܝܢ ܓ̇ܒܠܐ ܐܝܬܝ ܠܟܡܘܢܐ ܒܪ ܠܚܝܘ ܕܫܦܝܪܐ ܗܘܐ ܡܕܒܪܐ. ܡܢ
ܚܠܦܝ ܡܬܒܪ̈ܬܐ ܗܠܝܢ ܠܒܝ ܠܝ ܘܠܢ: ܢܗܘܐ ܐܡܝܢܐ ܕܡܬܚܫܒܬ̈ܐ
ܘܡܫܒܚܢܘܬܐ. ܘܡܬܡܗܝܢܘܬܐ ܘܡܬܡܠܟܢܘܬܐ ܥܡܛܠܬܐ. ܘܢܫܡܐ
ܕܝܗܘܐ ܒܡܠܟܐ ܕܚܠܦܝ ܡܬܒܪ̈ܬܐ܀

113 ܘܠܡ ܦܠܝ ܐܘܫܦ ܐܦ ܒܚܘܪܐ ܐܡܝܢܐ ܕܠܠ̈ܟܬܐ. ܘܢܠܘܪܬܐ ܕܫܒ̈ܥܐ.
ܡܠܟ ܕܐܦ ܢܠܘܪܬܐ ܕܫܒ̈ܥܐ ܠܐ ܦܘܫܐ ܠܝ: ܐܝܟ ܗܘܐ ܡܫܡܫܢܘܬܐ ܠܒܪ
161r ܐܝܬ. ܘܡܬܦܢܝܢܬܐ ܡܢ ܐܠܗܘܐ || ܡܦܩܕ ܐܝܬ܀

114 ܐܦ ܕܝܢ ܢܛܪ ܐܝܬ ܦܠܝ ܒܣܘܦܬܐ ܕܪܘܚܐ. ܐܝܠܝ ܓܡܝܪ̈ܐ ܕܓܠܒܘܬܐ.
ܘܐܬܪ̈ܬܘܬܐ ܕܪܒܝܬܐ ܕܠܡܕܒܪ ܡܬܓܠܝ. ܒܪܝܗ ܦܘ̈ܫܝ ܕܐܡܪܢ ܠܝ
ܠܝܬ ܦܪܘܫ܀

115 ܠܡܕܒܪܐ ܐܡܝܢܐ ܕܡܫܚܬܐ: ܡܬܘܬܐ ܦ̇ܝ ܕܒ̇ܪ ܠܠܒܐ. ܘܢܚܘܬܐ
ܕܦܘܢܐ ܕܠܡ ܡܚܝܢܐ܀

116 ܐܦܝܢܐ ܕܡܐܢܐ ܕܦܫܪܐ ܡܢ ܓܝܢܐ ܐܢܬܘܢ. ܦܢܐ ܕܝܢ ܓܘܡܪܐ ܠܐ
ܡܬܬܪܢܐ: ܒܝܕ ܡܠܒܒܢܘܬܐ ܕܪܘܚܐ ܘܐܐܪ. ܦܘܠܐ ܦܠܓܘܗ[64] ܡܢ ܠܗܘܢܐ
ܐܝܬܘܗܝ: ܦܢܐ ܕܝܢ ܓܘܡܪܐ ܠܐ ܡܬܬܪܢܐ ܒܡܫܬܐ: ܒܝܕ ܡܠܒܒܢܘܬܐ
ܕܪܘܚܐ ܘܢܘܗܪܐ ܕܡܘܕܥܐ܀

[61] ܥܠܡܘ V [62] ܬܘ: ܠܒܕ: ܡܝܡ: ܗܘ: ܡܝܡ ܗܘ: ܚܙܬ P: ܠ: ܟ: ܩ: ܘ: ܩ: ܝ: ܣ V [63] ܢ̇ܕܥܐ P: ܚܟܐ scripsi [64] Fortasse legendum ܦܠܓܘܬ ܕܒܪܢܫܐ

111. Блажен инок, который во время молитвы узрел свою душу, когда начертаны на ней сии буквы: *тав, ламад, мим, йуд, мим, нун, хэт,* и прочёл [их], и размыслил о них, и не отступало сие написание от сердца его ни днём, ни ночью. Вдвойне же блажен тот, кому дано действие во втором [умном] чувстве [т.е. слухе][а][13], и перед кем прочли сие святое написание, и нёбо ума которого испробовало сладость сих божественных тайн.

112. Если же ты хочешь быть собеседником сего святого написания, то из всех добродетелей избери себе сии и храни: постоянный умеренный пост, терпение, смирение, послушание в простоте[14] и любовь, которая есть исполнение всех добродетелей.

113. И к сим прибавь также постоянное ночное бдение и хранение помыслов, ибо, если у тебя не будет хранения помыслов, ты всуе и тщетно трудишься — и ты получишь дар от Бога.

114. Когда же ты соблюдёшь сие в собранности (*ḥīṣūṯā*) разума, тогда среди десяти тысячь способов нет способа изречь те всполохи благодати и мест*а* ведения, которые [тогда] откроются твоему уму (*madʕāḵ*).

115. Постоянное памятование воскресения есть мертвенность от мира (*ʕālmā*) единение ума со Христом.

116. Как сосуд горшечника состоит из глины, а ненарушимую (*lā meštaryānā*) форму получает через действие огня и воздуха, так и тело [человека] состоит из праха, а неразрушимую (*lā meštaryānā*) форму получит в воскресении через действие огня и Духа Святого.

а См.: *Evagrius Ponticus.* Capitula gnostica II, 35 // PO. 28/1. P. 74–75

---

13 Версия S 1: «Ум также обладает пятью духовными чувствами (*reḡšē*), коими он зрит и чувствует [Божественные] помышления (*sukkālē*) о тварных [вещах]. Итак, зрение показывает ему подлинное (*ʔayḵ suʕrānē*) бытие вещей (*ṣeḇwāṯā*); слухом же он приемлет логосы о них; посредством же обоняния он услаждается святым благоуханием, в коем нет искажённого смешения, притом что [и умное] небо устен его услаждается сими [вещами]. Посредством же осязания он с точностью приемлет истинное удостоверение в сих [вещах]». Версия S 2: «Ум также обладает пятью духовными чувствами (*margšānwāṯā*), коими он ощущает сродные себе вещи (*hūlas* (= ὕλη)*ʾḥyānāyāṯēh*). Итак, [умное] зрение являет ему неприкрыто (*ʕarṭellāʔīṯ*) умопостигаемые деяния (*suʕrānē meṯyaḏʕānē*), слухом же он приемлет логосы о них; благоуханием же, чуждым всякого искажения, услаждается обоняние [ума]; сладость же (букв. “от сладости”) сих [вещей] приемлют уста; посредством же осязания он [ум] уверяется, получая удостоверение в [умопостигаемых] деяниях (*taḥwīṯā dīlhon d-suʕrāne*)».

14 Букв. «простое послушание».

117 ܒܪ ܟܠܗܘܢ ܡܫ̈ܬܘܬܐ ܚܕܐ ܗ̇ܝ ܕܡܠܒܪܐ ܠܒܪܚܐ. ܗ̇ܢܘ ܕܝܢ. ܗ̇ܝ ܕܢܫܡܪ
ܢܫ̈ܝܐ ܒܚܝܘܬܐ܀

118 ܚܡܪܐ ܦܐܪܐ ܗ̣ܘ ܕܪܘܚܐ. ܗ̣ܘ ܕܝܢ ܪܘܚܐ ܡܫܝܚܐ ܗ̣ܘ ܕܐܝܬܘܬܐ܀

119 ܚܙܝܐ ܫܦܝܪܐ ܕܐܝܬܘܬܐ. ܠܐ ܡܬܚܙܝܢܐ ܗ̣ܘ ܐܠܐ ܚܕܐ. ܒܪܡ ܒܬܠܬ
ܡܬܝܕܥ ܘܒܚܕ ܡܬܬܘܕܝܐ܀

120 ܚܕܐ ܠܦܬܪܐ ܡܬܒܥܝܢ ܘܡܫܬܚܢ ܠܝܘܡܐ. ܠܗܘܢܐ ܕܝܢ ܡܕܘܒܪܝܢ܀

121 ܠܠܒܐ ܗܘܝܐ ܒܗܢ ܬܐܠܡܘܪܬܐ ܗ̣ܘ ܕܬܫܠܠܐ. ܒܪܡ ܐܚܕ ܕܚܫܐ ܡܬܬܠܝܢ
161v | ܒܗ̇ ܘܐܚܕ ܕܡܘܬܐ܀

122 ܒܪ ܥܡܠܐ ܫܠܝܚܘܬܐ ܡܫܬܟܚ ܗܘܢܐ. ܒܚܘܬܐ ܕܝܢ ܡܠܝܟ ܡܒܡ ܬܟܠ܀

123 ܐܚܘܢܐ ܕܚܕܐ ܗ̣ܝ ܐܪܐܐ ܒܚܫܘ. ܐܚܬ ܒܗ̇ ܕܝܢ ܥܡܬܠܘܐ ܫܠܝܐܐ. ܗܘܝܐ
ܒܗ̇ ܚܕܐ ܗ̣ܝ ܒܚܫܘ ܐܪܐܐ ܕܠܒܘܬܐ ܕܒܚܬܐ: ܐܚܬ ܒܗ̇ ܥܡܬܠܘܐ
ܫܠܝܐܐ: ܠܗܘܬ ܚܐܪܘܬܐ ܕܒܚܫܘܗܝ܀

124 ܐܝܟ ܚܕܐ ܠܐܝܬܐ. ܗܘܝܐ ܗܘܢܐ ܕܒܗ: ܠܡܬܒܠܘ ܢܗܘܪܐ ܕܬܠܡܘܬܘܬܐ
ܡܕܒܪܬܐ܀

125 ܠܐܕܝܦ ܕܢܦܫܐ ܐܬܠܗܘܢ. ܐܪܙܐ ܕܡܬܠܠܐ ܠܗܘܢܐ ܒܠܒܝ ܝܠܗܘܬܐ.
ܠܒܠܒܦ ܕܝܢ. ܚܕܘܬܦ ܕܠܡ ܢܗܘܪܐ ܕܬܠܡܘܬܘܬܐ ܡܕܒܪܬܐ܀

126 ܒܗܘܒܐ ܕܡܬܚܙܐ ܒܠܒܐ ܒܠܒܝ ܝܠܗܘܬܐ ܐܪܙܐ ܗ̣ܘ ܕܠܠܒܐ ܚܕܬܐ܀

117. Из всех смертей есть одна, которая помогает человеку: она состоит в том, чтобы[15] терпеть искушения с радостью.

118. Любовь есть плод Духа[a], Сам же Дух есть *кнома* Сущности.

119. Поклоняемое естество Сущности не сложно, но едино (*īḥīḏāyā*), однако познаётся в Трёх и исповедуется в Одном.

120. Страсти утучняют тело и ослепляют душу, ум же губят.

121. Век сей есть дом торговли[b] для словесных [существ], однако одни зарабатывают в нём жизнь, а другие — смерть.

122. От слушания многие [вещи] постигает ум, в в*и*дении же он узнаёт нечто немногое.

123. Как земля одна по своему естеству, но у неё есть многие состояния [в разные времена года], так и у земли сердец людей; притом что она одна по своему естеству, есть много состояний в соответствии со свободой их воли.

124. Как цель для стрел, так чистый ум для приятия света Святой Троицы.

125. Удача (*gaˀddāh*) души есть тайна, открывающаяся уму во время молитвы; праздник же её есть её единение со светом Святой Троицы.

126. Звезда, которая видна в сердце во время молитвы, есть тайна нового века.

---

a Гал. 5, 22 b См.: *Iosephus Hazaias*. Epistula de tribus gradibus vitae monasticae 1–2 // PO. 45/2. P. 288

---

15 Букв. «то есть та, чтобы».

127 ܗ̇ܝ ܢܘܪܐ ܕܡܬܚܙܝܐ ܠܗܘܢܐ ܒܥܕܢ ܨܠܘܬܐ. ܒܗ̇ ܡܬܚܙܝܢ ܛ̈ܠܠܐ
ܒܟܠܠܐ ܚܕܬܐ܀

128 ܪܐܙܐ ܕܡܫܝܚܐ ܐܬܚܙܝܗ̇ ܡܚܘܝܢܘܬܐ. ܟܘܟܒܐ ܕܝܢ ܕܐܬܪܘܗܝ ܚܙܬܗ ܕܟܠܠܐ
ܚܕܬܐ܀

129 ܟܠ ܐܡܬܝ ܕܙܘ̈ܥܐ ܕܚܡܬܐ ܕܠܒܪ ܡܢ ܟܝܢܐ ܐܝܬ ܒܬܪܥܝܬܐ. ܠܐ
|| ܚܫܫ ܟܐܒܐ ܕܢܩܪܒ ܠܒܗ ܡܛܠ ܕܗܘ ܡܬܒܠܥܐ ܕܚܙܬ ܫܦܝܪܘܬܗ܀ 162r

130 ܡܠܐܟܐ ܕܡܫܡܠܝܘܬܐ ܕܢܦܫ ܠܝ. ܟܠ ܦܓܪܐ ܐܝܬ ܠܗ ܡܫܡܠܝܢܘܬܐ ܒܢܦܫܗ.
ܟܠ ܚܐܪܘܬܐ ܕܝܢ: ܠܐ ܡܫܡܠܝܐ ܕܢܦܠܠ ܨܒܝܢܗ܀

131 ܠܐ ܢܫܒܘܩ ܠܟ ܕܪܚܡ ܡܠܐܟܐ ܡܢ ܒܪܢܫܐ: ܕܡܠܟܐ ܪܘܚܢܐ ܟܠ ܒܢ̈ܝܬܗ.
ܡܛܠ ܕܡܠܐܟܐ ܠܗ ܚܝ̈ܠܐ ܕܢܦܫܐ ܡܬܚܒܫ. ܒܪܢܫܐ ܕܝܢ

ܪܘܚܢܝܐ. ܠܦܓܪܐ ܘܠܢܦܫܐ ܓܒܐ ܕܝܠܗ܀

132 ܪܚܡܬܐ ܐܦ ܢܦܫܐ ܠܒܪ ܡܢ ܟܝܢܐ. ܡܠܐܟܘܬܐ ܡܩܒܠܐ ܐܫܬܘܬܐ. ܚܕܬܐ
ܕܝܢ ܟܠܐ ܕܐܬܬܘܬܝ̈ܬܐ ܘܢܦܫ̈ܬܐ ܠܒܪ ܡܢ ܬܫܒ̈ܘܚܬܗ ܕܟܝܢܐ. ܠܡܫܚ
ܐܬܝܐ ܠܡܥܒܕ ܡܕܒܪܢܐ܀

133 ܠܟܬܐ ܕܟܠ ܫܡܫܐ ܕܐܝܬ ܡܢ ܬܠܬ ܬܠܬܠ ܐܝܬܘܗܝ: ܐܘ ܡܢ ܚܝܬܐ
ܐܘ ܡܠܟܐ ܐܘ ܡܢ ܠܥܘܕܪܐ܀

134 ܚܘܫ̈ܒܐ ܕܪܘܓܙܐ ܬ̈ܠܝܢ ܠܐܘܫܥܢܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܠܦܓܪܐ ܡܚܒܝܢ ܘܠܗܘܢܐ
ܡܫܚܢܝܢ܀

135 ܠܠܒܐ ܗܢܐ ܒܪܘܚܘܬܐ ܦܪܫܝܐ ܐܝܬܘܗܝ. ܘܡ̈ܠܠܬܐ ܒܪܘܚܘܬܐ ܐܚܪ̈ܢܝܬܐ.
ܚܟܡܬܗ ܕܝܢ ܕܐܠܗܐ ܒܪܘܚܘܬܐ ܬ̈ܒܐ ܕܒ̈ܝܬܝܢ ܠܦܪܘܫܝܐ. ܘܟܒ ܠܒ
ܗܘܝܐ. ܒܪܡ ܟܠ ܐܠܗܐ ܠܗܘܬܐ ܕܚܝܐ ܐܝܟܘ ܘܟܠܟܐ. ܗܘܝܐ ܢܗܘܐ
ܬ̈ܠܐ ܘܠܒܒ ܦܐܪ̈ܐ܀

127. В том огне, который виден уму во время молитвы, будут мучиться разумные [существа] в новом веке.

128. Начало любви есть вера, конец же обеих есть в*и*дение нового века.

129. Всякий раз, когда в разуме (*tarʕīṯā*) есть движения ярости, которая [вышла] за пределы естества, бес не нуждается в том, чтобы воевать с ними, потому что она [сама] замещает его действие[16].

130. У ангела-хранителя, сопутствующего нам, есть власть только над телом; что же касается свободы в нас, то он не властен прекратить её волю.

131. Не думай, что бес хуже человека, исполненного гнева на соработников своих, потому что бес сражается с помыслами души, а гневливый человек хочет погубить тело и душу.

132. Вожделение, даже если выходит за пределы естества, легко приемлет врачевание. Ярость же, когда подвигнется и выйдет за границы естества, с трудом возвращается к своему прежнему чину.

133. У каждого существующего помысла есть одна из трёх причин: или в*и*дение, или слышание, или воспоминание.

134. Помыслы гнева возмущают сущность души, иссушают тело и ослепляют ум.

135. Век сей подобен раю, а разумные [существа] подобны деревьям[a]; Премудрость же Божия подобна водам, орошающим рай. И хотя это так, однако всякое дерево пьёт воду и приносит плоды соответственно тому, насколько мягка и хороша у него земля.

---

a См. Быт. 2, 8–9

---

16 Букв. «заполняет место его действия».

162v 136 ܩ̈ܠܝܠ ܠܐܢܫܐ ܕܡܬܟܝܦ | ܢܦܫܗ ܠܥܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܓܢܐ ܠܚܡܣܐ.
ܗܟܐ ܕܕܢܚ ܥܡܛܐ ܡܥܝܪ ܠܗ ܣܘܟܐ. ܘܡܢܬܗ ܡܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܦܘܫܐ.
ܒܝܘܡܘ̈ܗܝ ܠܐܠܗܐ ܕܐܬܟܠ ܢܦܫܗ ܒܐܪܥܐ ܕܡܓܢܐ ܠܚܡܣܐ. ܕܦܐܪ̈ܘܗܝ
ܢܦܩ ܒܟܘܢܗ ܘܦܐ̈ܪܘܗܝ ܠܐ ܢܬܠܢ: ܟܕ ܡܘܪܟܐ ܕܢܫܩܘܬܐ ܐܝܟ ܕܟܬܒ ܀

137 ܫܘܫܢܐ ܕܠܐ ܡܓܒܒ ܠܐ ܚܫܚ ܠܡܪܟܐ. ܘܦܘܢܐ ܕܠܐ ܡܪܕܘܬܐ[65]
ܢܘܪܐ ܗܘ ܠܒܥܠܬܐ ܕܬܠܡܝܕܘܬܐ ܡܕܡܝܬܐ ܀

138 ܡܕܝܢܬܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܒܝܫܬܐ ܒܝܬ ܡܠܡܪܐ ܗܘ ܕܢܘܗܪ̈ܐ. ܘܡܥܒܐ[66]
ܕܠܝܬ ܒܗ ܢܕܠܘܬܗ ܕܡܟܝܟܐ ܦܬܘܡܐ ܗܘ ܕܠܫܠܝܐ[67] ܀

139 ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܡܬܒ ܠܐ ܚܒܪܐ ܦܐܪ̈ܐ. ܘܦܘܢܐ ܕܠܐ ܡܢܬܐ ܕܢܕܠܬܐ. ܠܐ
ܚܒܪ ܦܐܪ̈ܐ ܕܢܨܚܬܐ ܀

140 ܒܝܘܡܘ̈ܗܝ ܠܐܢܫܐ ܕܠܐ ܦܢܐ ܘܬܢܐ ܡܢ ܚܛܗܐ: ܘܐܫܬܒܩ ܕܥܘܠܐ ܗܘ[68]
ܠܠܬܐ ܕܡܬܡܪܟܡܘܬܗܘܢ ܕܙܘܢܐ ܒܝܬ ܚܛܗܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܝܢ ܠܠ ܒܝܘܡܐ.
ܠܐܢܫܐ ܕܐܬܦܪܫ ܡܢ ܚܒܪܐ ܕܙܘܢܐ ܘܐܬܦܣܩ ܠܚܛܗܐ ܀

141 ܐܝܟ ܕܢܩܒܐ ܕܝܡܢܐ ܕܚܘܒܬܐ ܕܠܒܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܡܫܘܚܬܐ ܕܒܗ ܡܬܚܙܝܐ
163r ܢܘܪܐ ܕܬܠܡܝܕܘܬܐ ܡܕܡܝܬܐ || ܒܠܒܝ ܝܠܘܕܬܐ. ܢܠܒܘܫ ܡܢ
ܦܐܪ̈ܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܫܬܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܗܘܢ ܕܡܘܟܟܐ ܠܦܐܪ̈ܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ[69]
ܡܕܒܪܢܘܬܐ ܐܝܟ ܫܬܘܪܐ[70] ܠܝܬ ܀

142 ܐܝܟ ܠܒܐ ܥܡܛܐ ܘܡܘܟܟܐ ܠܝܬ: ܘܫܘܦܪܐ ܠܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܠܗ ܡܕܡ.
ܕܠ ܕܒܠܗ ܦܠܚܝܢ ܫܪܘܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܬܟܒܘܬܐ ܫܡܫ ܫܘܠܛܢܐ.
ܡܛܠ ܚܝܐ ܕܠܒܐ ܘܡ̈ܠܟܐ ܀

[65] ܘܦܘܢܝܬܐ ܠܐ ܡܪܕܘܬܐ in ܘܦܘܢܐ ܕܠܐ ܡܪܕܘܬܐ correxit P [66] ܘܘܡܥܒܐ P: ܘܡܥܒܐ scripsi [67] ܕܠܫܠܝܐ in ܕܠܫ̈ܠܝܐ correxit P [68] In hoc numero librarius primo lamed (30) pro mem (40) scripsit, deinde errorem suum correxit [69] ܘܕܡܟܘܬܐ in ܘܕܕܡܟܘܬܐ correxit P (ܕ suprascriptum) [70] Librarius primo uau pro thau scripsit, deinde errorem suum correxit

136. Горе тому, кто поднял себя над землёй, пригодной для орошения, ибо когда взойдёт солнце, тогда иссушит его жар и концом его будет пылание огня. Блаженно древо, насадившее себя в земле, пригодной для орошения, ибо *плоды свои оно даст во время своё, и листья его не опадут*[a] во время холода и искушений, как написано.

137. Необузданный конь не пригоден для битвы, а ум без наказания чужд ведения Святой Троицы.

138. Город, в котором нет людей, — обиталище шакалов[b], а душа, в которой нет ведения Христа, — вертеп разбойников[c].

139. Земля без воды не приносит[17] плодов, а ум без воды ведения не соделывает плодов радости.

140. Блажен тот, кто не отделил плевел от пшеницы и постиг, в чём причина оставления плевел среди пшеницы[d]. Вдвойне же блажен тот, кто удалился от дела плевел и примкнул к пшенице.

141. Тот, кто хочет стяжать чистоту сердца, которая есть зеркало, в котором виден свет[e] Святой Троицы во время молитвы, пусть избегает плодов древа-клеветника (*ʔīlānā sāṯōrā*), ибо нет ничего, что губит плоды праведности и чистоты так же, как клевета.

142. Если солнце зашло, и нет звёзд, и луна не видна внутри ума[18], знай, что всё твоё делание напрасно и [сие] дело имеет нужду в покаянии, скорби сердца и слезах.

---

a Пс. 1, 3 (по Пешитте) b Ср. Ис. 13, 22 c Ср.: Иер. 7, 11; Мф. 21, 13; Мк. 11, 17; Лк. 19, 46
d См. Мф. 13, 24–30.36–43 e Ср. 2 Кор. 3, 18

---

17 Букв. «не соделывает».

18 О видении солнца, луны и звёзд см.: *Iosephus Hazaias*. Epistula de gratiae operibus 1–10 // PO. 39/3. P. 500–504

143 ܚܘܛܪܗ ܕܐܗܪܘܢ ܡܢܐ ܕܠܠܝ̈ܬܐ ܠܡܫܡܫܢܐ ܠܡܕܝ̈ܢܬܐ ܦܐܪܐ. ܘܡܣܒܪܐ ܡܢܐ
ܕܢܐܟܠ ܠܥܠܡܐ. ܠܗܢ ܦܐܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ܀

144 ܒܢܗܘܪܐ ܕܗܘܢܐ ܐܫܬܘܝ ܡܘܗܒܬܐ ܠܡܡܠܠܐ ܕܠܗ ܐܠܗܐ ܘܐܬܚܙܝ
ܐܦܘ̈ܗܝ. ܘܡܣܒܪܐ ܒܢܗܘܪܐ ܕܝܠܕܐ[71] ܥܘܕܐ ܒܗ ܒܫܠܕܐ ܡܬܝܕܥܘܬܐ ܠܬܐܘܪܝܐ
ܕܬܠܝܬܝܘܬܐ ܡܫܬܡܥܐ ܘܠܗܘܢ ܕܠܡܫܬܥܢܐ ܘܕܠܐ ܣܟܐ ܠܥܠܡ܀

145 ܐܝܟܢܐ ܕܡܢܘܢ ܒܡܢܐ ܕܒܡܠܐܢ ܠܗܢ ܗܘܐ. ܠܐ ܐܫܬܘܝܬ ܠܡܫܡܫ
ܠܒܢ̈ܝ ܡܠ̈ܟܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܚܕܐ. ܒܡܐ ܕܒܡܢܝܐ ܠܗܢ. ܠܐ
ܡܫܬܘܝܐ ܠܡܫܬܘܬܦ ܒܡܫܝܚܘܬܐ ܕܡܢܝ ܕܐܬܢ ܒܗ܀

146 ܒܡܫܠܚ ܒܢܝ ܠܒܝܬܝ ܕܐܡܪ ܐܢܐ. ܕܠܐ ܡܫܬܘܝܐ ܐܝܬ ܠܒܫܬܘܬܗ
ܪܘܚܢܝܬܐ ܕܡܫܝܚܐ ܘܠܫܬܘܬܗ ܡܫܬܘܝܐ. | ܐܠܐ[72] ܐܝ ܠܒܠܒܐ ܠܡܠܬܐ ܠܒܪ 163v
ܐܝܬ. ܕܫܘܘܐ ܕܝܢ ܒܢ ܢܬܦܫܛ ܕܡܫܒܚܐ. ܒܫܡ ܠܝ.[73] ܐܦ ܗܘܝܢܐ
ܦܐܪܐ ܕܡܫܒܚܬ ܚܝܐ ܕܗܦܟܘ ܡܫܝܚܐ. ܒܠܠܗ ܒܢ ܥܠܡܐ. ܠܐ ܡܫܟܚ
ܐܝܬ. ܐܢܫ ܠܒܢܝܢ ܘܚܙܝ ܐܝܟ ܒܟܝܢܐ ܒܟܠܗܘܢ ܕܝ̈ܘܡܝ ܕܠܠܡܐ. ܕܟܠ
ܕܡܟܠ ܡܗܘܡܢܬܐ ܒܢ ܐܠܗܐ. ܒܟܠܗ ܡܟܠܗ. ܐܟܪܙܘ ܠܢܝ ܒܡܫܒܪܐ
ܡܟܠܗ ܒܠܗ ܡܫܡܥܘ: ܘܗܘܒ ܠܗ ܪܘܒܘܝܐ ܕܐܘܚܕܢ. ܘܐܘܚܕܢ ܒܡܫܒܪܐ
ܣܘܦܝ ܘܡܠܠ ܠܒܗ. ܘܠܡܘܒܠ ܒܣܘܪܒܐ ܚܙܝ ܠܗ ܫܒܠܬܐ ܕܪܝܫܗ
ܫܡܥ ܒܟܡܢܐ. ܘܕܘܒ ܒܓܠܝܬܐ ܬܐܙܠ[74] ܗܘܐ ܓܠܝܐ ܐܝܟ ܕܗܘܐ:
ܕܝܦܪܢ ܒܗܘܢ ܘܝܒܫ ܒܡܫܒܪܐ. ܘܐܠܗܐ ܒܡܫܒܪܐ ܐܫܬܘܝ ܠܡܫܡܫ
ܡܡܠܠܐ ܪܒܒܐ: ܘܠܡܫܬܘܐܠܗ ܕܗܢܐ ܠܗܒ ܐܝܬ. ܘܐܢܫܐ ܓܗܘܟܐ ܢܗܒ
ܠܗܢܐ ܕܡܫܬܘܐ ܠܡܫܡܫ ܚܢܢ ܕܡܫܝܚܐ: ܘܚܙܒ ܒܟܠܗ ܠܚܘܕܐܝܬ.
ܘܚܘܫܒܐ ܠܗܬܪ ܒܠܠܝܐ

[71] ܕܝܠܕܐ in ܕܺܝܠܶܕܐ correxit P [72] ܐܝ in ܐܠܐ correxit P [73] Hoc punctum ad sensum addidi [74] ܬܐܙܠ ܬܐܙܠ P: ܬܐܙܠ scripsi

143. Жезл Аарона, когда вошёл в скинию, принёс плоды[a]. И инок, когда входит в безмолвие (*šelyā*), приносит плоды праведности.

144. На горе Синай Моисей сподобился беседы с Богом и просветилось лицо его[b]; и инок на горе безмолвной и безлюдной[19] сподобляется созерцания Святой Троицы и созерцания телесных и бестелесных.

145. Как Израиль, пока обитал в Египте, не сподобился услышать гласов Божиих[c]; так же и инок, пока обитает в покое (*b-šaynā*), не сподобится славного в*и*дения Господа нашего, Который обитает в нём.

146. Послушай, сын мой, нечто, что я скажу тебе: ты не сподобишься духовного ведения Христа и Его святого в*и*дения, кроме как войдя в безмолвие. Стать же сонаследником Моисея тебе легко. Также и многочисленных плодов Сокровища ведения, Которое есть Христос, ты не обретёшь без безмолвия. Подними очи свои и смотри: о преуспевшие [святые] во всех поколениях века [сего], из которых каждый, кто принял дар от Бога, принял его в безмолвии! Ведь Авраам в пустыне принял его[20] в шатре своём, и [Бог] дал ему залог — Исаака[d]. И Исаак в пустыне узрел Его и говорил с Ним[e]. И Иакову Он в пустыне показал лестницу, вершина которой касалась неба[f]. И Давид в молитве просил *крылья, как у голубя*, чтобы *улететь на них и поселиться в пустыне*[g]. И Илия в пустыне сподобился услышать *мягкую речь* [Бога][h] и быть спрошенным: *Что ты делаешь* [*здесь*]*?*[i] И Иеремия называет блаженным того, кто сподобляется *взять иго* Христово, *сидя* уединённо в безмолвии[j]. И Иезекииль, богатый откровениями, видел в пустыне колесницу с колесами, которая носила сияние (*zīwēh*) Препрославленного[k] и изумительный образ (*ṭup̄sā*) нашего воскресения и обновления[l].

---

a См. Числ. 17, 1–8 b Исх. 34, 4–35 c См. Исх. 1, 1–2, 25; 19, 9.17–19; 20, 1–18 d См. Быт. 18, 1–33; 21, 1–3 e См. Быт. 26, 1–6 f См. Быт. 28, 10–17 g Пс. 54/55, 7 h 3 Цар. 19, 12 (по Пешитте) i 3 Цар. 19, 13 (по Пешитте) j Плач. 3, 27–29 k См. Иез. 1, 1–2, 1 l См. Иез. 37, 1–10

---

19 Букв. «пустынной от обитания».

20 По согласованию в оригинальном тексте «его» относится к «дару».

ܒܡܕܒܪܐ ܚܕܐ ܡܢܚܡܬܐ ܕܠܝܠܝܐ ܕܠܠܝܐ ܘܗܘ ܕܡܕܡܝܐ. ܘܠܦܫܐ
ܬܦܢܝܐ ܕܡܕܡܬܐ ܘܕܘܡܝܬܐ. ܘܠܦܥܠܐ ܗܘܢ ܒܫܘܪܝܐ ܐܬܬܪܝܒ: || 164r
ܦܘܦܐ ܡܫܒܪܢܝܐ ܕܕܡܬܐ ܢܗܪܬܐ: ܘܡܫܘܚܐ ܕܦܘܦܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܡܪܝܐ.
ܦܘܦܐ ܡܢ ܬܘܒ ܐܘܫܝܐܬܐ ܒܡܕܒܪܐ ܢܼܟܦ ܦܘܐ ܕܠܘܬܦ ܕܐܠܗܐ.
ܫܠܢ ܒܢ ܫܘܠܬܝܐ ܕܡܕܒܪܢܘܬܐ. ܐܚܪܝܐ ܦܘ ܥܬܝܕܐ ܕܠܠܫܦܘܢ[75].
ܕܟܪܐ ܚܠܝܢ ܕܐܬܬܦܚܬ ܠܗ ܫܡܚܬ ܒܢܝܐ[76] ❖

147 ܐܚܪܢܐ ܕܐܠܗܐ ܒܫܢ ܝܘܡ ܦܘܫܩܐ ܕܐܚܘܦܝ: ܠܐ ܡܫܒܠ ܦܘܐ
ܡܢܗ ܒܡܕܒܪܬܐ. ܦܚܢܐ ܐܢ ܠܐ ܡܚܫܐ ܐܢܕ ܠܠ ܒܦܝܪܐ ܘܡܫܝܠܬܐ
ܕܡܢܒܦ: ܠܐ ܡܫܝܠ ܒܦܘܦܚܬܐ ܒܢ ܐܠܗܐ❖

148 ܐܫܦܘ ܕܢܒܠܐ ܐܢܬ ܕܬܐܪܬ ܐܪܙܐ ܕܦܠܢܦ ܕܡܕܡܝܐ. ܡܕܡܢܬ ܐܫܬܚܒ
ܕܡܢܐ ܦܝ ܡܠܟܕܘܬܦ[77] ܕܕܡܦ. ܡܛܠ ܕܦܝ ܕܠܐ ܦܕܐ ܠܐ ܡܬܠܒܪܐ❖

149 ܐܢ ܕܢ ܕܝܫܠܢ ܘܡܠܐ ܘܫܡܥܬܐ ܢܒܠܐ ܐܢܬ. ܡܕܡܢܬ ܫܡ ܬܫܡܚܐ
ܠܠܢܝܐ ܘܠܡܥܡܕܠܬܐ ܘܠܠܚܝܐ. ܡܛܠ ܕܦܝܘܢ ܕܠܐ ܦܠܢ ܠܐ ܡܬܝܠܢܢ❖

150 ܥܘܡܪܐ ܘܡܦܘܪܐ ܕܡܕܠܬܐ ܒܢ ܡܕܡ ܕܡܕܡܝܬܐ ܐܝܟ ܡܠܠܘܢܐ. ܕܡܕܠܬܐ ܕܡܘܡ ܡܕܠܐ
ܚܝܐ❖

151 ܐܢ ܢܒܠܐ ܐܢܬ ܕܠܐ ܡܠܢܘܢ ܒܠܒܢ ܚܡܝܕܐ ܕܐܠܘܗܠܐ. ܠܢ ܐܢܬ | 164v
ܡܕܡܢܬ ܕܠܐ ܬܬܚܝܕ ܒܠܒܢ ܒܚܡܬܐ ܠܠ ܒܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܦܠܢ
ܬܪܬܦܢ ܠܚܪܕܐ ܢܡܢܦ❖

152 ܚܠ ܒܚܡܬܐ ܕܡܬܒܝܒ ܒܢܝܐ ܠܠ ܒܢܬܦ. ܡܕܡܢܬ ܦܘ ܡܫܬܚܢ ܒܢ
ܦܐܪܝ. ܘܦܕܢ ܡܥܡܠܐ ܠܗ ܒܠܒܢܐ. ܦܚܢܐ ܢܝܫ ܐܦ ܠܠ ܠܚܬܬܐ❖

75 Librarius ܥܬܝܕܐܘܢ in ܥܬܝܕܐ ܕ correxit et ܠܠܫܦܘܢ adscripsit
76 ܫܠܢ ܒܢ ܫܘܠܬܝܐ ... ܫܡܚܬ ܒܢܝܐ : locus difficilis; quem ita intellegendum putamus: «Praeter oeconomiae opera [i. e. res gestas in Sacris Litteris narratas], sunt quoque [ad litteram: «aliud est»] narrationes de ceteris [Christi athletis]: de unoquoque, cui data est adoptio»
77 ܡܠܟܕܘܬܐ in ܡܠܟܕܘܬܦ correxit P

И блаженный Иоанн вырос в пустыне[a] и стал вестником Нового Завета, показавшим Подателя Царства небесного[21]. И, снова, Сам Господь наш постоянно в пустыне *пребывал всю ночь в молитве к Богу*[b]. Помимо дел домостроительства[22], другое [важное свидетельство] — это повествования о прочих [праведниках]: о каждом, кому дано сыноположение.

147. Как Сим, если бы не покрыл наготу отца своего, не принял бы от него благословений[c], так и человек, если не покроет недостатков и немощей ближнего своего, то не примет дар от Бога.

148. Если ты желаешь унаследовать тайну Тела Христова, то прежде уразумей, что представляет собой действие Крови Его. Ибо первое без второго[23] не достигает совершенства.

149. Если же ты желаешь хранить движения и помыслы, то прежде положи предел очам, слуху и языку[d], потому что первые не могут быть хранимы без вторых[24].

150. Пост и бдение, которые [совершаются] в ведении, суть разрушители форм перед видящим умом (*madʕā ḥazzāyā*).

151. Если ты желаешь, чтобы в твоё сердце не прошли сопротивные помыслы, прежде всего следи [за тем], чтобы не замышлять тебе зло против человека в сердце своём, ибо сии две [вещи] примыкают друг к другу.

152. Плоды любого зла, которое человек замышляет против ближнего своего, он[25] пожнёт прежде всего сам и тогда [уже] исполняет его[26] на деле; так же рассуждай и о добре.

---

a Лк. 1, 80 b Лк. 6, 12 c См. Быт. 9, 20-27 d Ср. Пс. 140, 3

---

21 Букв. «вестником Нового Завета и явителем Подателя Царства Небесного». См. Ин. 1, 15.29 — 34.36

22 Т. е. историй, изложенных в Священном Писании.

23 Букв. «ибо то без этого».

24 Букв. «те не могут быть хранимы без этих».

25 Замысливший зло.

26 Зло.

153 ܐܝܬ ܗܕܐ ܕܒܚܙܝܢ[79] ܐܢܫ ܡܕܡ ܓܠܝܢܐ. ܘܠܐܬܪܗ ܘܢܦܩ ܡܢ ܠܒܗ[78]
ܡܚܘܝܬܐ ܕܗܘܦܟܐ ܒܕܡܘܬ ܡܚܘܝܬܐ ܕܫܡܝܐ ܠܬܪܝܢ ܒܥܩ̈ܒܬܐ[80]. ܘܡܬܠܚܫܐ[81]
ܡܢ ܡܕܡ ܠܚ̈ܫܘܗܝ ܒܗܘ ܢܦܫܐ ܥܒܕܝܐ. ܟܠܗ ܒܪܢܫܐ ܕܡܬܚ̈ܙܝܢܐ
ܘܡܬܚܙܝ̈ܢܐ. ܒܗܘܐ ܠܗܢܐ ܡܬܚܙܐ ܡܢܝ ܒܟܠܗܘܢ ܕܡܬ̈ܚܙܝܢ. ܘܡܫܬܒܗܪ
ܠܚܝܐ ܕܐܬܚܙܝܬ ܠܗܘ ܚܙܬܐ ܡܠܟܬܐ ܢܗܪܐ❖

154 ܐܝܟܘ ܕܐܡܪܐ ܐܒܐ ܠܡܐܪܬܐ ܢܗܪܐ ܕܢܦܫ. ܐܘܕܥܪ ܡܢ ܗܘ ܕܨܒܝܢܐ ܢܗܪܐ
ܘܫܒܝܐ. ܕܐܬܚܙܝܘܗܝ ܒܠܚܘܕ. ܕܐܬܚܙܝ ܕܡܪ̈ܘܡܐ. ܕܫܠܝܡܘܬܐ. ܒܡܫܡܫܢܘܬܐ. ܠܐ
ܦܪܣܘܦܐ. ܡܫܚ ܒܪ̈ܘܐ. ܠܗܢܐ ܒܥܝܢܐ ܢܗܝܪܐ ܕܒܠܝ̈ܬܐ ܕܐܝܬܝܐ❖

165r 155 ܐܒܘܗ ܕܐܪܓܠܐ ܠܐ ܥܒܕܐ || ܠܠ ܠܒܢ̈ܐ ܕܒܗ ܒܘܒܐ ܢܦܫܐ. ܦܘܠܐ
ܐܦܠܐ ܢܗܪܐ ܕܐܬܬܕܝܢܬ ܒܗ[82]. ܡܡܠܠܐ ܥܒܕܐ ܠܠ ܠܘ̈ܐ ܕܢܗܘܐ ܕܒܗ.
ܕܬܢܘܐ ܫܠܘܪܘܬܗܘܢ ܒܠܒܪܐ❖

156 ܠܡܒܥܘ ܐܝܟ ܠܐܒܐ ܕܐܦܐ ܡܚܘܝܬܐ ܥܠ̈ܝܬܐ. ܕܡܢ ܒܗܘ ܒܠܠܒܐ
ܢܗܪܐ ܥܙܐ. ܘܡܠܗܘܢ ܠܢ̈ܦܫܗܘܢ ܠܟܠܗ ܡܢ ܥܒܕܐ ܕܢܗܪܐ ܚܒܝܒ.
ܐܠܐ ܠܐ ܐܝܬܝܗ ܡܚܘܝܬܐ ܕܥܠ̈ܝܬܐ: ܚܠܐ ܕܨܒܝܢܐ ܥܠܝܗ ܠܟܠܗܘܢ.
ܐܠܐ ܒܗܘܦܟܐ ܗܘ ܕܡܢ ܐܠܗܐ ܡܬܚܙܝܐ ܠܫ̈ܒܝܐ ܦܠܚ̈ܐ.
ܘܗܘܕܐ ܥܙܝܙܐ ܕܗܘܐ. ܠܡܒܥܐ ܡܢܗܘܢ ܣܓܝܐ. ܐܟܢ ܠܢ ܗܘܒܐ.
ܠܢܗܪܐ ܡܚܘܝܬܐ ܥܠ̈ܝܬܐ ܒܕܠܠܐ[83] ܕܬܐܪܬܐ. ܐܠܐ ܐܠܐ ܥܒܘܕܐ
ܗܘ ܕܡܬܢܚܡܢܘܬܐ ܐܠܗܘܬܐ. ܕܐܬܥܒܕ ܕܠܗ ܚܠܐ ܗܘ ܕܨܒܝܢܐ ܥܠܝܗ
ܠܟܠܗܘܢ. ܐܠܐ ܒܗܘܦܟܐ ܗܘ ܕܡܢ ܐܠܗܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܫ̈ܒܝܐ ܠܗܘܐ
ܦܠܚܐ. ܘܬܒܥ ܥܡܝܕ ܠܝ ܡܢ ܣܬܪܐ ܐܠܗܝ ܕܐܡܪ. ܠܡܡܠܠܐ ܐܡ̈ܪܐ
ܡܬܠܠܢ. ܘܠܗܘܢ ܗܘ[84] ܡܬܒܩܒܐ ܕܡܬܦܪܣܐ | ܥܡܝܩܬܐ. ܗܘ ܕܝ 165v
ܢܒܥܬܐ ܕܬܠܝܬܝܘܬܐ ܡܬܦܫܩܬܐ❖

[78] Hoc caput in Fragmento altero (H et K testimonio) quoque inuenitur [79] ܘܚܙܝ H K: ܕܒܚܙܐ in ܕܒܚܙܝܢ correxit P [80] ܥܩ̈ܒܐ H K [81] ܘܡܬܠܚܫܐ K; in H librarius primo ܘܡܬܠܚܫܐ genere masculino scripsit, deinde iod subscripsit, ut genus femininum fieret [82] ܕܒܗ P: ܒܗ scripsi [83] ܒܕܠܠܢ P: ܒܕܠܠܐ scripsi [84] Librarius post hoc uerbum ܡܬܠܝܬܝܘܬܐ scripsit, deinde deleuit (nota uocem ܕܬܠܝܬܝܘܬܐ in extremo capite)

153. Бывает, что, когда некто стоит на коленях перед Крестом и из сердца его плещет и выходит поток света, подобно изобилующему струями потоку воды[27], и скрывается от глаз его в оном славном свете всё творение чувственных и умопостигаемых, во время сие Господь наш зрим в сердцах святых; и блажен тот, кто сподобился сего в*и*дения, исполненного жизни.

154. Если ты желаешь унаследовать Жизнь жизни твоей, остерегайся того, чтобы приобрести чуждую жизнь, которая есть сие: ведение [многоразличных] способов; хитрость; зло; неверие; лицемерие; злой глаз [и] зависть к благам других.

155. Как во время нисана земля не может удержать корни, находящиеся в ней, так и душа, очистившаяся в себе, не может удержать сокровища ведения, находящиеся в ней, от того чтобы явить на деле (*ba-ʕḇāḏā*) их действие (*sāʕōrūṯhōn*).

156. Блажен, братия мои, тот, кто стяжал истинное смирение, ибо он уже пребывает в новом веке и все его труды заключены внутри стены ведения. Но истинное смирение не есть сила, над которой властна воля, но она есть дар, подаваемый Богом инокам-подвижникам. И истинный свидетель сего — блаженный Марк Отшельник (*īḥīḏāyā*). Ведь он говорит так: «Истинное смирение не есть упрёк совести, но оно есть знак божественного милосердия»[a], имея в виду (*d-nēʔmar*), что это не сила, над которой властна воля, но дар, по милости подаваемый Богом уму-подвижнику. И опять, слышали мы и из божественной книги, которая говорит: «Смиренным открываются тайны[b], и именно им подаются небесные дары», т.е. ведение Святой Троицы.

---

a *Marcus Eremita.* De his qui putant se ex operibus justificari 103 // SC. 445. P. 342 («Смиренномудрие есть не осуждение (κατάγνωσις) совести, но признание (ἐπίγνωσις) благодати Божией и Его милосердия»). Рус. пер.: *Марк Подвижник, прп.* Аскетические творения. СТСЛ, 2013. С. 48

b Ср. Лк. 10, 21; дословно эти слова с маркером цитаты приведены в *Isaacus Ninevita.* Collectio I. Sermo 4

---

27 Букв. «потоку воды, изобилующему излияниями» (*ʕattīr šep̄ʕē*).

157 ܐܝܟ ܕܙ̇ܓܒܐ ܕܝܚܘܕܘܗܝ ܠܒܢ̈ܝ ܥܠܡ̈ܝ ܓܠܝܘܬܐ. ܒܗ ܠܒܢܝ ܫܘܒܚܐ
ܕܐܠܗܐ ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܒ̈ܢ ܒܗ. ܢ̇ܛܪܐ ܢܦܫܗ ܡܢ ܪܘܓܙܐ ܘܐܟܣܘܬܐ. ܘܡܢ
ܫܦܝܠܐ ܘܡܘܟܟܐ ܫܪܝܪܐ. ܘܢܝܚܐ ܡܟܝܟܘܬܐ ܘܫܠܝܐ. ܘܗܘܝܢ ܫ̇ܘܐ ܠܗ
ܒܓܘ ܠܗ ܒܕܡܘܬܐ ܐܚܪܝܗ ܕܡܡܟܟܐ ܕܪ̈ܘܚ ܒܪܘܡܐ ܒܟܘܠܐ ܕܡܫܟܐ❖

158 ܕܚܙܬ ܒܘܟ ܠܐܝܟ ܕܒܪܟܐ ܣܓܕܬ ܕܗܟܢ ܠܥܠܡ ܗܘܐ. ܘܚܙܐ ܗܘ̇ܝܬ
ܠܡܠܐܟ̈ܐ ܕܫܪ̈ܝܢ ܗܘܘ ܒܫܢܝܗܘܢ ܠܠܡܘܬ ܐܝܟ ܕܡܫܬܡܫܝܢ. ܒܢܦ ܗ̇ܘ
ܡܠܐܟܐ ܕܒܫܠܡܘܬܐ ܕܢܦܩ ܗܘܐ ܠܗ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܠܗ ܗܘ ܒܦܢܝܬ
ܗܝܟܠܐ ܕܡܪܝܐ ܘܦ̈ܪܕ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܒܗܘ. ܗܠܝܢ ܗܘܢܝ ܐܣܓܝܢ ܐܝ̈ܟܢ.
ܕܡܢܟ ܕܒܒܐ ܗܘ ܒܫܠܝܠܘܬܐ ܕܡܠܐܟ̈ܐ ܕܠܠܝܢ: ܘܟܠ ܟܠܗܝܢ ܒܪ̈ܝܬܐ.
ܘܐܠܗܠܐ ܕܟܠ ܙܘܥܐ ܕܡܬܬܙܝܥ ܗܘܐ ܒܒܪܝܬܐ. ܒܗ ܡܬܚܙܝܢܘܬܐ
ܕܡܠܐܟ̈ܐ ܗܘܝܐ. ܒܗܝ ܐ̈ܝܟܢܐ || ܗܘܝܬ ܕܐܡ̈ܪܝ ܗܘܘ ܒܬܘܒܐ ܐܠܗܝܐ:
ܟܠ ܡܠܐܟܐ ܗ̇ܘ ܕܫܠܝܚ ܗܘܐ ܒܥܘܒܕܐ ܕܡܢܝ: ܗܢ ܡܥܕܪ ܐܦ ܡܠܐܟܐ
ܫܘܒܚܐ ܥܠܝܢܐ. ܗܘ ܐܦ ܐܬܘܕܝܬܐ ܗܢ

ܐܬܚܙܝܬ ܟܠ ܐܘܪܚܐ ܗܕܐ ܠܐܠܗܐ ܣܓܝ ܕܗܘܕܝܬ ܐܢܐ ܒܬܘܒܐ.
ܕܡܠܐܟܐ ܢܦܩ ܘܢܚ̇ܬ ܡܢ ܡܬܪܘܬܗ ܒܠܐ ܘܬܚܒܝܢ ܘܫܘܟܢܐ ܐܠܗ̈ܝ.
ܕܚܘܪܐ ܕܟܠ ܡܫܡ ܒܪܢܫܐ ܕܐܪܥܐ ܟܠ ܒܚ̈ܝܝܐ. ܒܐܝܕܐ ܕܡܠܐܟ̈ܐ
ܐܪܥܐ. ܗܟܢܐ ܐܫܬܘܕܥ ܐܦ ܟܠ ܒ̈ܪܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝ ܐܬܝܢܗܘܢ
ܡܚ̈ܘܝܐ ܒܗ ܐܠܗܐ ܠܒܪܝܬܐ. ܐܝ ܕܝܢ ܠܗ ܒܗ ܒܫܠܝܡܘܬܐ ܕܡܠܐܟ̈ܐ
ܡܬܕܒܪܐ ܒܗ ܦܘܩܕܢܐ ܐܠܗܝܐ. ܒܗܝ ܐܠܗܐ ܫܘܒܚܐ ܕܝܚܝܕ ܕܐܡ̈ܪܐ[85]
ܠܡܚܝܠ ܕܗܘܘ ܥܠܝܗ ܗܘܐ ܟܠ ܒܢ̈ܝ ܠܗܘܢ: ܠܡܥܒܕ ܐܝܟ ܡܢ ܒܒܠ.
ܒܗܝ ܗܘܝܘ ܐܡ̈ܪ ܒܗ ܒܘܒܝܐ ܗ̇ܘ. ܕܗܘܘ ܡܬܚܐܠ ܡܠܐܟܐ ܪܒܐ:
| ܘܫܘܪܒ ܡܢ ܒܢ̈ܝ ܠܒܝ. ܒܠ ܕܒܬܒܠ

[85] sic P

157. Тот, кто желает узреть во время молитвы Господа нашего, облечённого славою Бога Слова, обитающего в нём, пусть очистит себя от гнева, и злобы, и от зависти, и тщеславия и приобретёт смирение и любовь, и тогда он узрит Его внутри сердца своего по подобию солнечного диска (*ʔesprēh d-šemšā*), сияющего на тверди в летнее время[a].

158. Что я увидел однажды человека, совершившего весьма тяжкий грех, и видел бесов, изострявших на него зубы свои, чтобы погубить его, но видел [и] сопутствующего ему ангела-хранителя, как он носил огненный меч и прогонял их [бесов] от него, — всё сие[28] мы сказали, братия мои, чтобы поведать, каково попечение ангелов о нас и о всех творениях. И если бы всякое движение, возникавшее в творении, не было при посредничестве ангелов, то в чём была необходимость божественному Писанию говорить о том ангеле, что убил первенцев египетских[b], сообщая также и о благом посланном ангеле?[c] Вот так же и ассириец, когда он бахвалился против Иерусалима и бесчестил живого Бога Израилева[d]: [об ассирийце] говорит Писание, что *ангел вышел* и погубил *из стана его сто восемьдесят пять тысяч*[e], чтобы показать, что всякое наказание, приходящее на людей, приходит через ангелов. Понимай так и в отношении благ. Ибо они [ангелы] суть посредники между Богом и творением. Если же не чрез попечение ангелов оно ведётся по божественному повелению, то в чём была необходимость блаженному Даниилу говорить о *Михаиле*, что он имел власть над *сынами народа* его вывести их из Вавилона[f]? Что же он говорит в то самое время? *Восстанет Михаил*, ангел *великий*, *и* спасёт *из сынов народа твоего всех, кто записан в книге* сей[g] [29]. И в чём необходимость, повторят мне много раз, когда иногда они являлись в виде *огненных всадников*[h],

a Ср.: *Iosephus Hazaias*. Epistula de gratiae operibus 6 // PO. 39/3. P. 502. b См. Исх. 12, 23 c См. Исх. 14, 19 d См. 4 Цар. 18, 19–35 e 4 Цар. 19, 35 f Дан. 12, 1 g Дан. 12, 1 (по Пешитте) h 4 Цар. 6, 17

28 Букв. «итак, сие».

29 Рефлексивную форму «спасётся» (*neštawzaḇ*) Иосиф Хаззайа цитирует как активную (*nšawzaḇ*, «спасёт»), делая подлежащим при ней «ангела Михаила».

ܒܫܘܦܪܐ ܗܘܝܐ. ܘܗܘܝܐ ܐܝܟ ܕܬܢܝܐ ܐܝܟ ܐܝܟ ܡܬܚܙܝܢܘܬܐ. ܒܗ ܒܗܘܢ ܒܕܡܘܬ
ܪ̈ܟܒܐ ܕܢܘܪܐ ܡܬܚܙܝܢ ܗܘܘ. ܘܒܗܘܢ ܒܕܡܘܬ ܩ̈ܠܝܬܐ ܕܢܘܗܪܐ ܡܬܚܙܝܢܐ
ܕܡܠܟܐ ܡܢܗܘܢ. ܐܝܟܢܐ ܕܐܬܚܙܝܘ ܠܗ ܐܠܝܫܥ ܒܕܡܘܬ ܪ̈ܟܒܐ
ܗܒ ܐܒܢ̈ܝ ܠܓܠܝܐ. ܠܐ ܢܬܕܡܪ ܒܢ̈ܝ ܡܛܠ ܕܡܫܠܝܐ ܐܢܘܢ ܕܠܟܡ ܡܢ
ܕܠܡܗܘܢ.[86] ܘܗܢ ܗܘܐ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܐܬܚܙܝ: ܕܠܝܬ ܒܫܠܝܘܬܐ
ܕܡܠܐܟ̈ܐ ܠܟܠ ܗܠܝܢ ܕܡܬܚ̈ܙܝܢ. ܕܒܗܘܢ ܡܢ ܗܘܕ̈ܡܐ ܕܡܬ̈ܒܐ
ܐܠܗ̈ܝܐ: ܕܐܝܟ ܢܠܒܐ ܗܘܝܐ ܢܘܚ ܒܐܕ̈ܢܝܗܘܢ. ܐܠܐ ܐܡܪ ܢܦܫܐ.
ܕܦ̈ܘܩܕܢܐ ܠܐ ܦܫܩܢ. ܘܠܡܬܚ̈ܙܝܘ ܠܐ ܬܕܠܝ❖

159 ܗܘ ܕܝܢ ܢܘܗܪܐ ܗܘܬ ܫܘܪܐ ܒܠܒܗ ܕܓܘܫܡܐ ܕܗܘܐ. ܦܠܐ ܗܘܐ ܗܘܐ ܘܐܡܪ
ܠܠ ܕܗܘܝܬܐ ܕܠܒܒ̇ܐ ܗܘܝܐ. ܕܠܒܐ ܕܗܘܝܐ ܒܗܝ ܒܗ ܐܠܗܐ: ܘܪܘܚ
ܬܫܡܫܬܐ ܚܕܬ ܒܝܗܒ. ܡܛܠ ܕܒܕܠ ܗܘܐ ܕܠܠܒ ܡܢ ܕܗܘܝܬܐ. ܪܘܚܐ
167r ܕܚܝܒ ܠܐ ܡܠܟܘܬܐ ܗܘܬ ܒܗ. ܗܘܝܐ ܠܝ ܒܠ ܐܝܟ ܕܡܬܩܢܝܢܐ ||
ܗܘܢ ܪܘܚܬܐ ܕܠܒ̈ܒܐ ܕܡܬܪܬܘܬܐ ܐܘܝܢܘܬܐ ܦܠܝ ܠܗܬ ܡܢܝ ܘܐܡܪܝ.
ܕܡܢ ܐܡܪܐ ܕܗܘܬ ܒܠܒ̈ܬܝ. ܕܐܬܚܫ ܡܢ ܪܘܚܝ ܡܚܝܐ: ܦܘ
ܕܐܬܗܘܝ ܒܗܡܠܐ ܕܠܒܒܡ❖

160 ܗܠܝܢ ܒܬܪ ܘܢܐ ܡܬܚܬܒ ܠܗ ܗܘܝܐ: ܕܠܠܗ ܠܗ ܡܢ ܕܠܬܐ ܕܐܠܗܐ.
ܚܕ ܘܐܝܟ ܠܠܘܬܐ ܕܡܢ ܫܘܒܐ ܕܐܠܗܐ ܘܕܡܪܒܐ. ܗܘܝܐ ܐܫܝܪܐ. ܕܠܐ
ܝܠܗܕ ܠܒܝܐ ܕܠܬܕ. ܢܕܠ ܠܝ ܕܟܠ ܐܡܬܝ ܕܚܕ ܡܢ ܗܠܝܢ ܘܝܐ ܐܝܬ
ܠܗ. ܠܝܬ ܠܗ ܐܬܪܐ ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܒܝܫܬܗ❖

161 ܝܦܐ ܐܝܬ ܕܢܬܠܒܒ ܐܘܝܢܘܬ ܝܘܒܠܐ ܕܐܠܗܐ ܒܪܘܚ. ܝܠܝܦ ܐܕܡ
ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܦܘ ܕܠܒܗ ܫܬܪ ܡܢ ܕܠܒܪ. ܡܛܠ ܕܚܕ ܠܫ̈ܒܐ ܫܬܦ ܠܝ.
ܘܐܫܪܒ ܠܗܬ ܒܗܘܬܐ. ܘܬܪܬܝܗܘܢ ܫܘܘܠܠܐ ܚܕ ܕܚܕ. ܚܕ ܕܢܦܠܐ ܗܘ
ܠܗ ܐܦ ܠܫܒܪܗ. ܘܐܫܪܝܐ ܕܢܦܠܐ ܕܗܘܒܕ ܗܘ ܠܗ ܐܦ ܠܫܒܪܗ❖

162 ܬܒܐܫܬܗ ܕܒܝܫܬܐ ܗܘ ܠܒܪ ܒܪܝܬܐ ܚܕܬܐ ܐܬܬܦܝ ܡܬܡܗܬܐ.[87]
167v ܒܝܫܗ ܕܝܢ ܡܬܬܡܠܟܘܬܐ.[88] | ܬܛܠܠܠܗ[89] ܕܝܢ ܫܘܒܐ ܕܦܘܗ ܐܬܬܘܗܝ
ܛܒܠܐ ܕܝܠܡܗ ܕܐܠܗܐ❖

[86] ܕܡܢ ܕܠܡܗܘܢ P: ܡܢ ܕܠܡܗܘܢ. scripsi [87] Ante hoc caput in P medio uersu ❖ signum positum est. Quod fortasse nouae pericopae in archetypo respondet [88] ܡܬܬܡܠܟܘܬܐ in ܡܬܬܡܠܟܘܬܐ correxit P (thaw suprascripta) [89] ܬܛܠܠܠܐ in ܬܛܠܠܠܗ correxit P

а иногда в виде стражей[30], охраняющих город Царя, их Господина; как они явились Елисею в виде всадников[a], когда он сказал отроку: *Не бойся,* сын мой, *потому что тех, которые с нами, больше, нежели тех, которые с ними*[b]. Следовало тем, кто говорит, что нет попечения ангелов над сими видимыми [вещами], устыдиться свидетельств божественных Писаний, подобно грому ударяющих им в уши. Но говорит пророк: *Постыдные не устыдятся и не ведают* скромности[c].

159. Когда же горел огонь в сердце блаженного Давида, он так вопиял и глаголал о чистоте сердца: *Сердце чистое сотвори во мне, Боже, и Дух Твой правый обнови во утробе моей*[d], — ибо он знал, что без чистоты Дух жизни не действовал в нём. Ибо так все, в ком горит рачение к трудам добродетели, непрестанно вопиют к Господу нашему и говорят: «Господь наш, всели чистоту Твою в сердца наши, да упокоимся мы Духом Твоим Святым, Тем, Кто есть исполнение всего».

160. Двумя способами сатана сражается с умом, чтобы отсечь его от ведения Бога: первый способ есть отделённость от любви к Богу и к ближнему, второй же способ [состоит в том], чтобы не вспоминать о будущем Суде. Ведь [сатана] знает, что, когда один из этих видов [добродетели][31] есть у него [у ума], нет у него [у сатаны] возможности исполнить своё зло.

161. Ты желаешь непрестанно исполнять волю Бога, Творца своего? Приклони ухо своё к слышанию того, что внутри, более чем [к слышанию] того, что снаружи. Ибо одно влечёт тебя к жизни, а другое — к смерти, и оба они суть противники друг друга: одно благоволит (*ṣāḇē*) и к себе, и к другу своему (*ḥaḇrēh*), а другое желает погубить и себя, и друга своего[32].

162. Основание дома, в котором обитает новый человек, есть смирение; здание же его есть послушание; крыша же его — любовь, которая есть печать и образ Божий.

---

a 4 Цар. 6, 17 b 4 Цар. 6, 16 c Иер. 6, 15 (по Пешитте) d Пс. 50, 12 (по Пешитте)

---

30 Букв. «солдат».

31 Т. е. любовь к Богу и ближнему и память о будущем Суде.

32 Т. е. внимание к внутреннему благотворно и для внутреннего, и для внешнего, а внимание к внешнему губительно и для того, и для другого.

Capita 163–191 in «Capitum gnosticorum» corporis principis centuria quarta, capita 192–222 in eiusdem corporis centuria quinta extant. Caput autem 166 de apocatastasi nonnullaeque capitum 193 et 194 sententiae de duabus Christi naturis in corporis principis manuscriptis multis omissae sunt[90] et in hac editione ponuntur.

[90] Codicum manu scriptorum corporis principis caput, quod in cod. Parisiaco BnF 434 numero 166 notatum est, in codicibus illis plerumque deest, in cod. Cantabrigiensi Add. 1999, f. 113v–114r, tantum continetur. Editor patri Paulo Raphaeli Pugliese, qui animum eius ad illum codicem aduertit, gratiam habet

Рукописи

Harvard. syr. 42 (*olim* Semitic Museum 3968; в аппарате издания: **H**), XV в., Кембридж, США, Библиотека Гарвардского университета; fol. 30b-33a, 67b-86a, 94b-96a (описание см.: PO. 39/3. P. 270–271).

Pampakuda, Konat syr. 303 (в аппарате издания: **K**), XVIII в., Пампакуда, Индия, частная коллекция семьи Конат; размер 15×22 см, fol. 60r–v, 167v-208v, 210r-213r (описание см.: *Калинин М. Г., Преображенский А. М.* «Главы о ведении» Иосифа Хаззайи. С. 265–269).

Paris. syr. 434 (в аппарате издания: **P**), 1576–1577 гг., Париж, Франция, Национальная библиотека Франции; размер: 14,5/15×20/21 см; fol. 142v-176r (описание см.: *Briquel-Chatonnet F.* Manuscrits syriaques de la Bibliothèque nationale de France. P. 180).

Vat. syr. 592 (в аппарате издания: **V**), 1918 г., Ватикан, Ватиканская апостольская библиотека; размер 21×26,7 см; fol. 96v-138r (описание см.: *Van Lantschoot A.* Inventaire des manuscrits syriaques des fonds Vatican. P. 120).

CPB 463 (olim ms 5.13; в аппарате издания: **B**), 1660 г., Багдад, Ирак. Библиотека патриархата Халдейской католической церкви; размер 15×21 см; p. 1–202 (описание см.: *Beulay R.* Des centuries de Joseph Hazzaya retrouvées? P. 6).

Источники

Evagrius Ponticus. Capita cognoscitiva // *Muyldermans J.* Evagriana. Extrait de la revue *Le Muséon*, vol. 42, augmenté de Nouveaux fragments grecs inédits. Paris: Paul Geuthner, 1931. P. 38–44.

Frankenberg W. Evagrius Ponticus. Berlin: Weidmann, 1912. (Abhandlungen der Königlichen Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen, Philologisch-historische Klasse. Neue Folge; Bd. 13/2).

Joseph Hazzaya. Lettre sur les trois étapes de la vie monastique / éd. P. Harb, F. Graffin. Turnhout: Brepols, 1992. (PO; vol. 45/2).

Iosephi Divini Hazaiae Capita gnostica / nunc primum reperta, collecta, edita; textus edidit M. Kalinin. Monte Athone; Aquinci; Moscoviae: Interpress, 2018. ([Museum scriptoribus mysticis syris investigandis]. Opera mystica syriaca; t. 1).

Iosephus Hazaias. Epistula de gratiae operibus // La collection des lettres de Jean de Dalyatha / éd. critique du texte syriaque inédit, trad. française, introd. et notes par. R. Beulay. Turnhout: Brepols, 1978. (PO; vol. 39/3). P. 248–255.

Isacco di Ninive. Terza collezione / ed. S. Chialà. Lovanii: Peeters, 2011. (CSCO; vol. 637. Scriptores Syri; t. 246).

Marc le Moine. Traités. T. 1 / éd. G. M. de Durand. Paris: Cerf, 1999. (SC; vol. 445).

Mar Isaacus Ninivita. De perfectione religiosa / ed. P. Bedjan. Parisiis: Via Dicta; Lipsiae: Otto Harrassowitz, 1909.

Les six centuries des «Kephalaia gnostica» d’Évagre le Pontique / éd. critique de la version syriaque commune et éd. d’une nouvelle version syriaque, intégrale, avec une double trad. française par. A. Guillaumont. Paris: Firmin-Didot, 1958. (PO; vol. 28/1).

Литература

Калинин М. Г., Преображенский А. М. «Главы о ведении» Иосифа Хаззайи: новое рукописное свидетельство и ранее не идентифицированные главы // Богословские труды. 2018. Вып. 47–48. С. 258–289.

Калинин М. Г. Новое свидетельство полемики о том, может ли человечество Христа созерцать Его Божество // БВ. 2019. Т. 34. № 3. С. 271–285.

Beulay R. Des centuries de Joseph Hazzaya retrouvées? // Parole de l'Orient. 1972. Vol. 3. P. 5–44.

Beulay R. La lumière sans forme: introduction à l'étude de la mystique chrétienne syro-orientale. Chevetogne: Éditions de Chevetogne, 1986.

Briquel-Chatonnet F. Manuscrits syriaques de la Bibliothèque nationale de France (nos 356–435, entrés depuis 1911), de la bibliothèque Méjanes d'Aix-en-Provence, de la Bibliothèque municipale de Lyon et de la Bibliothèque nationale et universitaire de Strasbourg: catalogue. Paris: Bibliothèque Nationale de France, 1997.

Van Lantschoot A. Inventaire des manuscrits syriaques des fonds Vatican (490–631), Barberini oriental et Neofiti. Città del Vaticano: Biblioteca apostolica vaticana, 1965. (Studi e testi; vol. 243).

Joseph Ḥazzāyā. Book of the Chapters on Knowledge Newly Discovered Fragments

A Critical Edition, Translation from Syriac, Preface and Notes (Continuation)

Maxim G. Kalinin
MA in Theology
Senior Teacher of the Biblical Studies department of Moscow Theological Academy
Research Assistant of SS. Cyril and Methodius School
for Post-Graduate and Doctoral Studies
4/2, building 1 Pyatnitskaya, Moscow 115035, Russia
jerm.est@gmail.com

For citation: "*Joseph Ḥazzāyā*. Book of the Chapters on Knowledge. Newly Discovered Fragments". A Critical Edition, Translation from Syriac, Preface and Notes by Maxim G. Kalinin (Continuation) // *Bible and Christian Antiquity*. 2019, no. 3 (3), pp. 15–51. (In Russian) doi: 10.31802/2658-4476-2019-3-3-15-51

Abstract. We proceed to publish the original text and Russian translation of the newly discovered fragments of «Book of the Chapters on Knowledge» of Joseph Ḥazzāyā (8th c.), one of the brightest representatives of the East Syriac mystical tradition. Now the readers are offered the original text and Russian translation of chapters 75–162 from the fragment of Joseph Ḥazzāyā's work known from the East Syriac manuscript Paris. syr. 434. These chapters include the commentary of Joseph Ḥazzāyā on Ezekiel's vision, another exegetical passages, sayings on humility and love, various descriptions of mystical experience, and a lengthy discourse on the role of angels in the life of human beings.

Keywords: mysticism, East Syriac mystical tradition, Joseph Ḥazzāyā, «Book of the Chapters on Knowledge», vision of Ezekiel, exegesis, anthropology, angelology.

References

Beulay R. (1972) “Des centuries de Joseph Hazzaya retrouvées?”. *Parole de l’Orient*, vol. 3, pp. 5–44.

Beulay R. (ed.) (1978) *La collection des lettres de Jean de Dalyatha*. Turnhout: Brepols (PO; 39/3).

Beulay R. (1986) *La lumière sans forme: introduction à l'étude de la mystique chrétienne syro-orientale*. Chevetogne: Éditions de Chevetogne.

Briquel-Chatonnet F. (1997) *Manuscrits syriaques de la Bibliothèque nationale de France* (*nos 356–435, entrés depuis 1911*), *de la bibliothèque Méjanes d’Aix-en-Provence, de la Bibliothèque municipale de Lyon et de la Bibliothèque nationale et universitaire de Strasbourg*: *catalogue*. Paris: Bibliothèque Nationale de France.

Chialà S. (ed.) (2011) *Isacco di Ninive. Terza collezione*. Lovanii: Peeters (CSCO; 637. Scriptores Syri; 246).

Durand G. M., de (ed.) (1999) *Marc le Moine. Traités*. Paris: Cerf, vol. 1 (SC; 445).

Guillaumont A. (ed.) (1958) *Les six centuries des «Kephalaia gnostica» d’Évagre le Pontique*. Paris: Firmin-Didot (PO; 28/1).

Harb P., Graffin F. (eds.) (1992) *Joseph Hazzaya. Lettre sur les trois étapes de la vie monastique*. Turnhout: Brepols (PO; 45/2).

Kalinin M. (ed.) (2018) *Iosephi Divini Hazaiae Capita gnostica*. Monte Athone; Aquinci; Moscoviae: Interpress (Museum scriptoribus mysticis syris investigandis. Opera mystica syriaca; 1).

Kalinin M. G., Preobrazhenskij A. M. (2018) “‘Glavy o vedenii’ Iosifa Hazzaji: novoe rukopisnoe svidetel’stvo I ranee ne identificirovannye glavy” [“Joseph Ḥazzāyā’s ‘The Chapters on Knowledge’: A New Manuscript Testimony and Earlier Unidentified Chapters”]. *Bogoslovskie trudy*, issue 47–48, pp. 258–289 (in Russian).

Kalinin M. G. (2019) “Novoe svidetel’stvo polemiki o tom, mozhet li chelovechestvo Hrista sozercat’ Ego Bozhestvo” [“New Evidence of the Controversy About Whether the Humanity of Christ Can Contemplate His Divinity”]. *Bogoslovskij vestnik*, vol. 34, no. 3, pp. 271–285 (in Russian).

Muyldermans J. (1931) *Evagriana. Extrait de la revue Le Muséon, vol. 42, augmenté de Nouveaux fragments grecs inédits*. Paris: Paul Geuthner.

Van Lantschoot A. (1965) *Inventaire des manuscrits syriaques des fonds Vatican* (*490–631*), *Barberini oriental et Neofiti*. Città del Vaticano: Biblioteca apostolica vaticana (Studi e testi; 243).